घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 247- बुधवार 08- जुलाई 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

भारत-इंडोनेशिया के बीच हुए 20 समझौते,नरेंद्र मोदी बोले...सर्वोच्च सम्मान मिलना सौभाग्य

भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीदेगा इंडोनेशिया ऑपरेशन सिंदूर में इस्तेमाल अस्त्र मिसाइल की भी डील

जकार्ता,07 जुलाई 2026। भारत-इंडोनेशिया के बीच मंगलवार को जकार्ता में 20 समझौते हुए। भारत इंडोनेशिया को ब्रह्मोस मिसाइल की अतिरिक्त यूनिट देगा। इसी के साथ फिलीपींस, वियतनाम के बाद इंडोनेशिया ब्रह्मोस खरीदने वाला तीसरा देश बन गया है। इंडोनेशिया ने ऑपरेशन सिंदूर में इस्तेमाल भारतीय 'अस्त्र' एयर-टू-एयर मिसाइल खरीदने का भी फैसला किया है। वहीं भारत इंडोनेशिया के लिए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन विकसित करने में भी मदद करेगा। राष्ट्रपति प्रबोवो ने उन्हें इंडोनेशिया का सर्वोच्च सम्मान दिया। इसके बाद पीएम ने इंडोनेशियाई संसद को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यहां सर्वोच्च सम्मान मिलना सौभाग्य है।

रामायण और महाभारत से जुड़े हैं भारत-इंडोनेशिया : पीएम मोदी

भारत और इंडोनेशिया सिर्फ समुद्र से ही नहीं, बल्कि साझा इतिहास से भी जुड़े हैं। हमारे रिश्तों की जड़ें रामायण और महाभारत की विरासत में हैं। बोरोबुदुर और प्रांबानन जैसे भव्य स्मारक हमें जोड़ते हैं। इंडोनेशिया का राष्ट्रीय प्रतीक गरुड़ भी हमारे सांस्कृतिक संबंधों की पहचान है। बाली जात्रा जैसे उत्सव हमारी साझा परंपराओं को दर्शाते हैं। स्वाद की बात करें तो यह कहना मुश्किल है कि 'क्रुपुक' ज्यादा कुरकुरा है या 'पापड़'। सदियों पहले गुजरात से व्यापारी और सूफी संत समुद्र के रास्ते इंडोनेशिया आए थे। वे अपने साथ इस्लाम के विचार और इस्लामी जीवन मूल्यों को भी लेकर आए थे।

पीएम मोदी ने कहा...भारत-इंडोनेशिया के संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे...

पीएम मोदी ने कहा कि पिछले कुछ दशकों में इंडोनेशिया की अर्थव्यवस्था ने तेजी से विकास किया है। भारत भी आज दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। मुझे विश्वास है कि हम भारत और इंडोनेशिया के संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। अपने-अपने लक्ष्यों को हासिल करने में दोनों देश एक-दूसरे के पूरक बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक में भारत और इंडोनेशिया के बीच व्यापार बढ़कर 25 अरब डॉलर तक पहुंच गया है। आज पूरी दुनिया अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की क्षमता को मानती है। इस क्षेत्र में भारत,इंडोनेशिया को अपना अहम साझेदार मानता है। इंडोनेशिया लंबे समय से भारत का सहयोगी रहा है और भारत भी उसके कई सैटेलाइट लॉन्च कर चुका है। पीएम ने कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है,मदर ऑफ डेमोक्रेसी है, और इंडोनेशिया दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी डेमोक्रेसी है।

विकसित भारत-2047 के लक्ष्य साथ हासिल करेंगे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इंडोनेशिया की संसद को संबोधित करते हुए कहा कि भारत और इंडोनेशिया ने आजादी का सफर साथ शुरू किया था। दोनों देश आजादी के 100 साल भी लगभग साथ ही पूरे करेंगे। इंडोनेशिया 2045 विजन पर काम कर रहा है, जबकि भारत विकसित भारत-2047 के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। ऐसे में दोनों देश अपने-अपने लक्ष्य हासिल करने में एक-दूसरे के पूरक बन सकते हैं। हम दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में हैं। हमारी अर्थव्यवस्थाएं दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हैं। हम प्रमुख समुद्री शक्तियां भी हैं। हम प्राचीन सभ्यताएं हैं और भविष्य के स्वाभाविक साझेदार भी। राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो के साथ उनकी बातचीत भी इसी सोच पर केंद्रित रही। हमारा लक्ष्य साफ है कि भारत और इंडोनेशिया के बीच भरोसे और सद्भाव को दोनों देशों के नागरिकों के लिए नए अवसरों में बदला जाए।

पीएम मोदी बोले...भारत और इंडोनेशिया के लिए समुद्र एक सेतु है...

हमारी राजधानियां भले ही हजारों किमी दूर हों,लेकिन समुद्र में हमारे बीच 150 किमी की ही दूरी है। दूसरे देशो में भले ही समुद्र दूरी का कारण रहा है,लिए भारत इंडोनेशिया के लिए समुद्र एक सेतु है। उन्होंने कहा कि आज भारत और इंडोनेशिया एक साथ खड़े हैं। आने वाले 25 साल हम दोंनों देशों के लिए महत्वपूर्ण हैं। हजारों साल तक हमारे जहाज व्यापार और संस्कृति को दूर-दूर तक लेकर गए हैं। हमारे पास समुद्र से जुड़ी भविष्य की अनेक संभावनाएं हैं। हमारा संबंध रामायण और महाभारत की विरासत से जुड़ा है। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 'बिंतांग आदिपूर्णा ऑफ द रिपब्लिक ऑफ इंडोनेशिया' मेडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया। यह इंडोनेशिया का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।

मोदी ने कहा...भारत-इंडोनेशिया में कुछ-कुछ होता है...

पीएम मोदी ने मंगलवार शाम को जकार्ता में भारतीय लोगों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि यहां भारत का गाना 'कुछ-कुछ होता है' बहुत लोकप्रिय है। जब भारत-इंडोनेशिया साथ मिलकर चलते हैं तो कुछ-कुछ से भी आगे बढ़कर बहुत कुछ होता है। पीएम बोले- राष्ट्रपति प्रबोवो ने कहा था कि उनके अंदर भारत का डीएनए है। उनकी इस बात ने भारतीयों के दिलों को छू लिया था। भारत-इंडोनेशिया का डीएनए म्युचअल ट्रस्ट से बना है। इससे पहले इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो ने मोदी की तारीफ करते हुए कहा, 'मैं आपका करियर कॉपी करता हूं।' उनके इतना कहते ही तालियां बजने लगीं। उन्होंने कहा,'मोदी सरकार की कई योजनाएं सफल रही हैं। इसलिए वे इन्हें अपनाने की कोशिश कर रहे हैं। अच्छा हुआ इन योजनाओं पर 'कॉपीराइट' नहीं है।'

आतंकवाद के खिलाफ भारत-इंडोनेशिया साथ खड़े हैं : पीएम मोदी

इंडोनेशिया की संसद को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने यह भी कहा कि आतंकवाद जैसे मुद्दों पर भारत और इंडोनेशिया हमेशा एक-दूसरे के साथ खड़े रहे हैं। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष भारत के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद इंडोनेशिया ने मजबूती से भारत का समर्थन किया था। पीएम मोदी ने इसके लिए इंडोनेशिया का आभार जताया। उन्होंने कहा कि दोनों देश संयुक्त कार्य समूह (जॉइंट वर्किंग ग्रुप) के माध्यम से आतंकवाद के खिलाफ मिलकर काम कर रहे हैं और इस सहयोग को आगे भी मजबूत किया जाएगा।

मोदी बोले...दुनिया में उथल-पुथल,हम शांति के समर्थन में...

दुनिया में मची उथल-पुथल के इस दौर में भारत का मानना है कि बातचीत और कूटनीति की भूमिका पहले से कहीं ज्यादा अहम हो गई है। फिलिस्तीन के मुद्दे पर, हम 'टू-स्टेट सॉल्यूशन' (दो-देश समाधान) और लंबे समय तक शांति का समर्थन करते हैं। हमारे दोनों देशों के लिए एक सुनहरा दौर आने वाला है। हमारे इतिहास में एक जैसी संस्कृति, वर्तमान में आपसी भरोसा और भविष्य में साझा समृद्धि है। मुझे पूरा भरोसा है कि हम मिलकर 'इंडोनेशिया एमास' (स्वर्ण इंडोनेशिया) और एक विकसित भारत के सपने को साकार करेंगे। लोकतांत्रिक मूल्य और विविधता में एकता, भारत और इंडोनेशिया दोनों की साझा ताकत रही है। हम दोनों देशों के चुनाव आयोगों के बीच एमओयू के जरिए अपने लोकतांत्रिक सहयोग को और मजबूत करने जा रहे हैं। वैश्विक मुद्दों पर भी भारत और इंडोनेशिया के बीच सहयोग लगातार बढ़ रहा है। इंडो-पैसिफिक को लेकर भी हमारे नजरिए में तालमेल है। भारत ने हमेशा आसियान की केंद्रीय भूमिका को खास अहमियत दी है।

अहमदाबाद सीरियल ब्लास्ट मामला...

गुजरात हाईकोर्ट ने 38 दोषियों की फांसी और 11 की उम्रकैद बरकरार रखी

नई दिल्ली,07 जुलाई 2026। साल 2008 में अहमदाबाद को दहलाने वाले भीषण सीरियल बम धमाकों के मामले में गुजरात हाईकोर्ट ने आज एक ऐतिहासिक और सख्त फैसला सुनाया है। अदालत ने निचली अदालत (स्पेशल कोर्ट) के उस फैसले पर अपनी मुहर लगा दी है, जिसमें 38 दोषियों को मौत की सजा (फांसी) और 11 दोषियों को उम्रकैद सुनाई गई थी। यह न्यायिक इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय है, क्योंकि किसी भी एक मामले में एक साथ 38 लोगों को फांसी की सजा का यह दुर्लभ उदाहरण है। कोर्ट ने न केवल दोषियों की सजा बरकरार रखी है, बल्कि पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदनशीलता दिखाते हुए मुआवजे का भी बड़ा ऐलान किया है। गुजरात हाईकोर्ट ने अपने आदेश में स्पष्ट किया है कि सीरियल ब्लास्ट में जान गंवाने वाले 56 निर्दोष लोगों के परिजनों को 10-10 लाख रुपये का मुआवजा दिया जाएगा। इसके साथ ही, धमाकों में गंभीर रूप से घायल हुए 200 से अधिक लोगों को 1-1 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने का निर्देश दिया गया है। यह मुआवजा राशि पीड़ितों के जख्मों को तो नहीं भर सकती, लेकिन सरकार और अदालत का यह कदम पीड़ित परिवारों के प्रति जवाबदेही और संवेदना को सुनिश्चित करता है।

चर्चित केतन अग्रवाल हत्याकांड में बड़ा खुलासा, सिया ने प्रेमी चेतन से पहले ही कर ली थी शादी

पुणे,07 जुलाई 2026। पुणे के चर्चित लोहागढ़ किला हत्याकांड में नया मोड़ सामने आया है। सूत्रों के अनुसार, मुख्य आरोपी सिया गोयल ने कारोबारी केतन अग्रवाल से तय शादी से कई महीने पहले ही अपने प्रेमी चेतन चौधरी से कथित तौर पर गुपचुप शादी कर ली थी। सूत्रों के मुताबिक, सिया गोयल और चेतन चौधरी ने करीब चार महीने पहले स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत अपनी शादी का पंजीकरण कराया था। हालांकि, इसी साल फरवरी में सिया की सगाई पुणे के 25 वर्षीय रियल एस्टेट कारोबारी केतन अग्रवाल से हुई थी और दोनों की शादी नवंबर में होने वाली थी। बता दें कि 18 जून को लोहागढ़ किले पर केतन अग्रवाल की खाई में गिरने से मौत हो गई। जांच एजेंसियों को संदेह है कि यह एक सुनियोजित साजिश थी और सिया गोयल, केतन अग्रवाल से शादी नहीं करना चाहती थी। पुलिस अब इस दावे की जांच कर रही है कि दोनों ने कानूनी रूप से विवाह का पंजीकरण कराया था। अधिकारी यह भी पता लगा रहे हैं कि क्या विवाह प्रमाणपत्र मौजूद है, क्योंकि ऐसा दस्तावेज जांच में अहम साक्ष्य साबित हो सकता है। सूत्रों के अनुसार, विवाह पंजीकरण के दौरान गवाह के रूप में हस्ताक्षर करने वाले सिया के कॉलेज के दो दोस्तों से भी पूछताछ की जा रही है। जांचकर्ता एक इंस्टाग्राम अकाउंट से हटाई गई तस्वीरों को भी रिकवर करने की कोशिश कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि इन तस्वीरों में सिया और चेतन शादी की वरमाला पहने नजर आ रहे थे, जो जांच में महत्वपूर्ण सबूत बन सकती हैं।

बीजेपी ने खोला पत्ता...प्रशांत किशोर के उम्मीदवार के सामने अभिषेक कुमार को उतारा

बांकीपुर,07 जुलाई 2026। बिहार में होने वाले विधानसभा उपचुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने अपने उम्मीदवार के नाम का ऐलान कर दिया है। बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति ने बांकीपुर विधानसभा सीट से अभिषेक कुमार को प्रत्याशी बनाया है। अभिषेक कुमार लंबे समय से पार्टी से जुड़े सामान्य कार्यकर्ता रहे हैं और वर्तमान में प्रदेश युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष पद पर हैं। बांकीपुर सीट बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के इस्तीफे के बाद खाली हुई थी। पार्टी ने इस सीट पर किसी बड़े नाम की जगह संगठन से जुड़े युवा चेहरे को मौका दिया है। बताया जा रहा है कि नितिन नवीन ने भी अपने इस्तीफे के बाद इस सीट के लिए अभिषेक कुमार के नाम को पसंद किया था।

अभिषेक कुमार कायस्थ समाज से आते हैं। बीजेपी संगठन में उनकी सक्रिय भूमिका रही है। प्रदेश कार्यालय से लेकर विधानसभा क्षेत्र स्तर तक वे पार्टी के कार्यक्रमों में लगातार सक्रिय रहे हैं। अब पार्टी ने उन्हें उपचुनाव में उम्मीदवार बनाकर बड़ा राजनीतिक अवसर दिया है। बांकीपुर विधानसभा सीट पर मुकाबला इस बार दिलचस्प होने वाला है। इससे पहले जनसुराज पार्टी ने इस सीट से प्रशांत किशोर को अपना उम्मीदवार घोषित किया था। ऐसे में बीजेपी और जनसुराज के बीच सीधी राजनीतिक टक्कर देखने को मिल सकती है।

नितिन नवीन के इस्तीफे के बाद खाली हुई थी सीट : बांकीपुर विधानसभा सीट बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के इस्तीफे के बाद रिक्त हुई थी। नितिन नवीन को बीजेपी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने के बाद उन्हें राज्यसभा के रास्ते दिल्ली भेजा गया। इसके बाद उन्होंने बांकीपुर विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। उनके इस्तीफे के कारण इस सीट पर उपचुनाव की स्थिति बनी। बीजेपी ने अब यहां से अभिषेक कुमार को मैदान में उतारकर संगठन के कार्यकर्ता को चुनावी मैदान में उतारा है।

30 जुलाई को होगा मतदान : चुनाव आयोग ने बिहार के अलावा मध्य प्रदेश और गुजरात की विधानसभा सीटों पर उपचुनाव कराने का कार्यक्रम जारी किया है। घोषित कार्यक्रम के अनुसार तीनों सीटों पर 30 जुलाई को मतदान कराया जाएगा, जबकि 3 अगस्त को मतगणना होगी। चुनाव आयोग के कार्यक्रम के अनुसार उपचुनाव के लिए 6 जुलाई को अधिसूचना जारी की गई। इसके साथ ही नामांकन प्रक्रिया शुरू हो गई। उम्मीदवार 13 जुलाई तक नामांकन दाखिल कर सकेंगे। 14 जुलाई को नामांकन पत्रों की जांच होगी, जबकि 16 जुलाई तक उम्मीदवार अपना नाम वापस ले सकेंगे। इसके बाद चुनाव मैदान में उतरने वाले प्रत्याशियों की अंतिम सूची जारी की जाएगी। मतदान के बाद 3 अगस्त को वोटों की गिनती होगी और उसी दिन परिणाम घोषित किए जाएंगे। पूरी निर्वाचन प्रक्रिया 4 अगस्त तक पूरी कर ली जाएगी।

भारत के ब्रिज मैन गिरीश भारद्वाज का निधन,140 पुलों की अमर विरासत

नई दिल्ली,07 जुलाई 2026। भारत के सुदूर और दुर्गम गांवों को अपनी इंजीनियरिंग की अद्भुत कला से जोड़ने वाले मशहूर 'सेतु पुरुष' (और पद्मश्री से सम्मानित गिरीश भारद्वाज का मंगलवार तड़के निधन हो गया। 76 वर्षीय भारद्वाज लंबे समय से बीमार थे और कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले के सुलिया स्थित एक निजी अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली। एक कुशल मैकेनिकल इंजीनियर के रूप में उन्होंने अपने तीन दशकों के करियर में न केवल पुलों का निर्माण किया, बल्कि हजारों लोगों के जीवन में नई आशा की किरण जगाई। उनके निधन की खबर से पूरे देश में, विशेषकर कर्नाटक में शोक की लहर दौड़ गई है और उन्हें श्रद्धांजलि देने का तांता लगा हुआ है। गिरीश भारद्वाज ने अपनी इंजीनियरिंग यात्रा की शुरुआत 1989 में पयस्विनी नदी पर अपना पहला सस्पेंशन (झूला) पुल बनाकर की थी। यह कोई सामान्य पुल नहीं था, बल्कि इसने एक नए और कम लागत वाले इंजीनियरिंग मॉडल की नींव रखी। इसके बाद उनका काम कर्नाटक और केरल जैसे राज्यों से निकलकर पूरे भारत में फैल गया। उन्होंने अपने करियर के दौरान देशभर में 140 से अधिक सस्पेंशन पुलों का निर्माण किया, जिसने अलग-थलग पड़े ग्रामीण समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ा।

उनके पुल केवल कंक्रीट और लोहे का ढांचा नहीं थे, बल्कि वे स्कूल, अस्पताल और बाजार तक जाने का एक सुगम मार्ग थे, जिसने हजारों ग्रामीण परिवारों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाया। उनके उत्कृष्ट सामाजिक योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने 2017 में उन्हें 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया।

आम की गुठलियों से वैज्ञानिकों ने बना दिया ऐसा चमत्कारी तेल और पाउडर

भागलपुर, 07 जुलाई 2026। बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) सबौर के वैज्ञानिकों ने आम की बेकार समझी जाने वाली गुठलियों का उपयोग कर पाउडर और बटर ऑयल तैयार करने की नई तकनीक विकसित की है। सबौर के वैज्ञानिकों ने इस नवाचार में 'रिफ्रैक्टेंस विंडो ड्राइंग' और 'कोल्ड-प्रेस एक्सट्रैक्शन' तकनीकों का उपयोग किया गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह तकनीक न केवल कृषि अपशिष्ट के बेहतर प्रबंधन में सहायक होगी, बल्कि खाद्य, कॉस्मेटिक्स, फार्मास्यूटिकल्स और बायोटेक्नोलॉजी जैसे उद्योगों के लिए भी उपयोगी साबित होगी। विश्वविद्यालय की योजना इस तकनीक को व्यावसायिक स्तर पर पूरे देश में लागू करने की है। बिहार कृषि सबौर के नेचर क्लब के सचिव एवं कृषि वैज्ञानिक डॉ. अवधेश पॉल ने बताया कि विश्वविद्यालय ने आम की गुठलियों और उनसे बनने वाले उत्पादों पर विस्तृत अध्ययन किया है। नेचर क्लब के स्वयंसेवक पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से विभिन्न फलों की गुठलियां एकत्रित करते थे और बच्चों को उन्हें लगाने तथा पौधारोपण के प्रति जागरूक करने के लिए प्रेरित करते थे। इसी दौरान वैज्ञानिकों ने गुठलियों के वैकल्पिक उपयोग पर शोध शुरू किया, जिससे कई उपयोगी उत्पाद विकसित करने में सफलता मिली। उन्होंने कहा कि इस बार हमारे वैज्ञानिकों ने फल की गुठलियों से तरह-तरह की चीजें बनाईं और लोगों को जागरूक किया। इसके लिए हमने लोगों को जागरूक किया और बीज एकत्रित कर अपना काम शुरू किया।

राम मंदिर ट्रस्ट को अब तक मिली 3,200 करोड़ रुपये की आय, खर्च के बाद शेष हैं 1,800 करोड़ : देव गिरि

अयोध्या,07 जुलाई 2026। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट में हालिया विवादों के बाद व्यवस्थाओं में बदलाव की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष स्वामी गोविंद देव गिरि ने कहा कि मंदिर की कार्यप्रणाली को अधिक पारदर्शी,त्रुटिरहित और प्रभावी बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि केवल इस्तीफा देने से समस्या का समाधान नहीं होगा, बल्कि कार्यप्रणाली में सुधार करना आवश्यक है।

मंदिर प्रबंधक के पद से जुड़े सवाल पर स्वामी गोविंद देव गिरि ने आईएएनएस से कहा कि गोपाल राव को पहले ही सूचित कर दिया गया है कि अब वे इस जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं करेंगे। उन्होंने बताया कि व्यवस्थाओं में बदलाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और आने वाले समय में अधिक प्रभावी प्रणाली लागू की जाएगी।

दमिश्क में राष्ट्रपति मैक्रों के होटल के बाहर कार में ब्लास्ट....6 की मौत,20 घायल

दमिश्क,07 जुलाई 2026। सीरिया की राजधानी दमिश्क में मंगलवार को फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के ठहरने वाले होटल के बाहर लगातार दो कार बम धमाके हुए। धमाकों में छह लोगों की मौत हो गई, जबकि करीब 20 लोग घायल हुए हैं। घायलों में सीरिया सरकार के पर्यटन मंत्री भी शामिल बताए जा रहे हैं। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, मृतकों में अधिकांश पुलिसकर्मी हैं, जो राष्ट्रपति मैक्रों की सुरक्षा व्यवस्था में तैनात थे। समाचार एजेंसी के अनुसार, धमाके उस समय हुए जब राष्ट्रपति मैक्रों होटल से निकलकर सीरिया के राष्ट्रपति अहमद अल-शरा से मुलाकात के लिए रवाना होने वाले थे। बताया जा रहा है कि होटल के बाहर खड़ी एक लाल रंग की कार में विस्फोट किया गया, जिसके बाद दूसरा धमाका भी हुआ। घटना के बावजूद राष्ट्रपति मैक्रों सुरक्षित हैं और उन्होंने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार राष्ट्रपति अल-शरा से मुलाकात की। फ्रांस के राष्ट्रपति भवन की ओर से घटना पर तत्काल कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। वहीं, सीरियाई पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने घटनास्थल को घेरकर जांच शुरू कर दी है। विस्फोट राजधानी के एक पॉश इलाके में हुआ, जहां उस समय बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे। राष्ट्रपति मैक्रों दो दिवसीय आधिकारिक दौरे पर दमिश्क पहुंचे थे। राष्ट्रपति अहमद अल-शरा के कार्यकाल में सीरिया का दौरा करने वाले वह पहले यूरोपीय संघ के नेता हैं। यह उनके दौरे का अंतिम दिन था। बता दें कि पूर्व राष्ट्रपति बशर अल-असद के सत्ता से हटने के बाद सीरिया की सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह स्थिर नहीं हो सकी है।

हाल के महीनों में आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट द्वारा कई हमले किए जा चुके हैं। इसके अलावा अलावी और कुर्द समूहों के साथ भी सरकार का तनाव जारी है।

संपादकीय

मुश्किलों के बीच निर्यात बढ़ाने की चुनौती

इस समय जब वैश्विक निर्यात की वृद्धि दर में कमी आती दिख रही है, तब भारत निर्यात बढ़ाने के साथ इस वर्ष निर्यात के ऊंचे लक्ष्य को प्राप्त करने की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। हाल में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बोर्ड आफ ट्रेड की बैठक में सभी राज्यों के औद्योगिक संगठनों से कहा कि सरकार द्वारा निर्यात की राह को आसान बनाया जा रहा है और भारत विकसित देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। भारत ने चालू वित्त वर्ष 2026-27 के लिए कुल एक लाख करोड़ डालर के निर्यात का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। चालू वित्त वर्ष में वस्तु निर्यात का लक्ष्य लगभग 530 अरब डालर (16-17 प्रतिशत वृद्धि) और सेवा निर्यात का लक्ष्य लगभग 470 अरब डालर (11-12 प्रतिशत वृद्धि) अनुमानित है।

पिछले वित्त वर्ष 2025-26 में भारत का कुल निर्यात 863 अरब डालर था। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में वस्तु निर्यात में 15 प्रतिशत और सेवा निर्यात में 11 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इस समय सरकार निर्यात बढ़ाने की रणनीति के तहत निर्यातकों को विभिन्न लाभ दे रही है। सरकार छोटे उद्योगों के अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन का खर्च निर्यात संवर्धन मिशन के तहत उठाएगी। उसने सतत टेक्सटाइल,टेक्निकल टेक्सटाइल,परफार्मेंस टेक्सटाइल और मेडिकल टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों में उभरते अवसरों को भी चिह्नित किया है। जिन क्षेत्रों में भारत पहले से ही उल्लेखनीय रूप से निर्यात कर रहा है सरकार की नई रणनीति उन क्षेत्रों में निर्यात बढ़ाने, तरजीह मिले हुए सेक्टर में निर्यात के विविधीकरण करने,गैर शुल्क बाधाएं कम करने तथा आपूर्ति से जुड़ी कमियों को दूर करने पर केंद्रित है।

यूरोपीय संघ,ब्रिटेन,न्यूजीलैंड,ओमान,मारीशस,संयुक्त अरब अमीरात (यूएई),आस्ट्रेलिया आदि देशों के साथ भारत के तेजी से बढ़ते द्विपक्षीय व्यापार समझौतों और मुक्त व्यापार समझौतों को हाल में पूरे देश में लागू की गई चार नई श्रम संहिताएं अधिक लाभप्रद बना सकती हैं। नए श्रम कानूनों से सेवा निर्यात में भी वृद्धि होते हुए दिखाई देगी। यह बात अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की नवीनतम सेवा निर्यात से संबंधित अध्ययन रिपोर्ट में भी रेखांकित हो रही है। इसमें कहा गया है कि हाल के दशकों में भारत से सेवाओं का निर्यात वस्तुओं की तुलना में कहीं तेजी से बढ़ा है। ये ऐसी सेवाएं हैं,जिन्हें बिना भौतिक निकटता के सीमाओं के पार पहुंचाना आसान है। साथ ही डिजिटल प्लेटफार्म, क्लाउड कंप्यूटिंग और रिमोट वर्क ने कई सेवाओं को व्यापार योग्य बना दिया है। जैसे-जैसे दूरी का महत्व कम होता जा रहा है और डिजिटल व्यापार बढ़ रहा है, वैसे-वैसे भारत से सेवाओं का निर्यात बढ़ रहा है। वैश्विक सेवाओं के निर्यात में भारत की हिस्सेदारी वर्ष 2004-05 में 1.9 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2025-26 में करीब 4.3 प्रतिशत हो गई।

इस समय दुनिया के विकसित और विकासशील देश भारत के साथ कारोबार बढ़ाते हुए दिखाई दे रहे हैं। ऐसे में भारत को निर्यात बढ़ाने के लिए निर्यात के नए बाजार और निर्यात विविधता की रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा। विशेष रूप से चिह्नित किए गए नए देशों के निर्यात बाजारों में अपनी निर्यात पैठ बनाने के हरसंभव उपाय करने होंगे। वर्तमान में भारत से कुल निर्यात का अधिकांश भाग अमेरिका,यूएई,ब्रिटेन,सऊदी अरब और चीन जैसे कुछ प्रमुख देशों पर निर्भर है। अब ऐसे देशों की संख्या बढ़ाने की जरूरत है,ताकि किसी एक या कुछ देशों में आर्थिक सुस्ती का सीधा असर भारत पर न पड़े। अब पारंपरिक बाजारों के अलावा उत्तर-पूर्व एशिया और पूर्वी अफ्रीका जैसे नए उभरते क्षेत्रों तक निर्यात पहुंच बढ़ानी होगी।

निर्यात विविधीकरण पर भी ध्यान देना होगा। हमें निर्यात बढ़ाने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ कई बातों पर ध्यान देना होगा। अल्पकालिक वृद्धि के पीछे भागने के बजाय भारत को मध्यम अवधि की राजकोषीय और बाह्य स्थिरता को सुरक्षित रखना होगा। लंबे समय से लंबित सुधारों को आगे बढ़ाना होगा। एआई जैसे उच्चस्तरीय क्षेत्रों में निवेश,मजबूत डिजिटल ढांचा और नियामकीय बाधाओं को बहुपक्षीय प्रयासों के माध्यम से आसान बनाना होगा, जो सीमाओं के पार सेवा निर्यात को बढ़ाने में अहम भूमिका निभा सकें। निर्यातकों की दिक्कतों को कम करना होगा। ये दिक्कतें केवल शुल्क वृद्धि तक सीमित नहीं हैं, वरन निर्यात पर लगाए गए एंटी-डंपिंग शुल्क से भी संबंधित हैं। भारत द्वारा विभिन्न देशों के साथ एफटीए के अधिकतम लाभ उठाने के लिए घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने, एफटीए के लिए जागरूकता बढ़ाने और गैर-टैरिफ बाधाएं दूर करने पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

उम्मीद करें कि विभिन्न देशों के साथ भारत के एफटीए और द्विपक्षीय व्यापार समझौते शीघ्रतापूर्वक आकार लेते हुए दिखाई देंगे। भारत निर्यात के नए बाजारों और निर्यात की विविधता से इस वर्ष निर्यात के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए वर्ष 2030 तक एक लाख करोड़ डालर वस्तु निर्यात और एक लाख करोड़ डालर सेवा निर्यात का लक्ष्य प्राप्त करने की राह पर आगे बढ़ते हुए दिखाई देगा।

गर्म होती पृथ्वी,ठंडी पड़ती समझ : भारत का जलवायु सच

बदलता मौसम,बदलता भारत : क्या हम सही दिशा में हैं?

धरती की चीख : क्या भारत जलवायु आपातकाल की दहलीज़ पर है?

रितेश कुमार जैन
बड़वानी,मध्यप्रदेश

भारतीय सभ्यता सदियों तक ऋतुओं पर उतना ही भरोसा करती रही,जितना सूर्योदय पर। खेती, नदियाँ, पर्व-त्योहार और जीवन मौसम की नियमित लय पर आधारित थे। किंतु अब प्रकृति चेतावनी दे रही है। अप्रैल-मई 2026 में कई शहरों का तापमान 46-48 सेंटीग्रेड तक पहुँचा,हीट-स्ट्रोक से जानें गईं और बिजली की मांग लगभग 270 गीगावाट तक पहुँची। जुलाई के आरंभ में मुंबई, पालघर और ठाणे में 200-300 मिमी तथा कुछ स्थानों पर 600-800 मिमी से अधिक वर्षा ने जनजीवन और ढांचे को ठप कर दिया। हिमालय में भूस्खलन,मैदानी क्षेत्रों में बाढ़, तटीय इलाकों में चक्रवात और सूखा बताते हैं कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य नहीं,वर्तमान है। विश्व मौसम संगठन (डब्ल्यूएमओ),अंतरसरकारी जलवायु परिवर्तन पैनल (आईपीसीसी) और भारतीय मौसम विभाग (आई एम डी) की नवीनतम रिपोर्टें भी इसी निष्कर्ष की पुष्टि करती हैं।

भारत की भौगोलिक विविधता उसकी सबसे बड़ी शक्ति भी है और सबसे बड़ी संवेदनशीलता भी। उत्तर में हिमालय,दक्षिण में हिंद महासागर, विस्तृत तटीय क्षेत्र,विशाल मैदान और शुष्क भूभाग के कारण मौसम का मामूली असंतुलन भी करोड़ों लोगों को प्रभावित करता है। वर्ष 2026 में प्री-मानसून हीटवेव ने दिन-रात दोनों की गर्मी के रिकॉर्ड तोड़े,जबकि असमान मानसून ने कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ ला दी। वैज्ञानिक इसे चरम मौसमी घटनाओं (एक्सट्रीम वेदर इवेंट्स) की बढ़ती आवृत्ति मानते हैं। कंक्रीट का अनियंत्रित विस्तार,नदी तटों पर अतिक्रमण, आर्द्रभूमियों का विनाश और अवैज्ञानिक शहरी नियोजन ने प्राकृतिक आपदाओं को मानवीय त्रासदी बना दिया है। आज अधिकांश आपदाएं प्रकृति से अधिक हमारी विकास नीतियों का परिणाम हैं। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) के अनुसार हीटवेव की अवधि और तीव्रता बढ़ रही है, जिससे पारिस्थितिक संतुलन डगमगाने लगा है।

जलवायु असंतुलन का सबसे गहरा प्रभाव कृषि पर पड़ रहा है,क्योंकि भारत की बड़ी आबादी आज भी मानसून पर निर्भर है। अनिश्चित वर्षा, बढ़ता तापमान,घटती मिट्टी की नमी और प्राकृतिक आपदाएं पारंपरिक खेती को कमजोर कर रही हैं। वर्ष 2015-2021 के बीच अतिवृष्टि से 33.9 मिलियन हेक्टेयर और सूखे से लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर फसल प्रभावित हुई। वर्ष 2026 में एल-नीनो और मानसून की देरी ने खरीफ उत्पादन की चिंता बढ़ा दी। फसल चक्र बिगड़ रहे हैं, पारंपरिक बीज कम प्रभावी हो रहे हैं और सिंचाई लागत बढ़ रही है। इसका असर किसानों की आय से आगे बढ़कर खाद्य सुरक्षा,ग्रामीण रोजगार और अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। यदि यह स्थिति बनी रही, तो कृषि संकट आर्थिक ही नहीं, सामाजिक अस्थिरता का कारण बनेगा। इसलिए जलवायु परिवर्तन को केवल पर्यावरणीय मुद्दा मानना उसकी गंभीरता को कम करके आंकना होगा।

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

जलवायु परिवर्तन का गंभीर प्रभाव स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है। तीव्र गर्मी हीट-स्ट्रोक,डिहाइड्रेशन और हृदय रोग बढ़ा रही है,जबकि बाढ़ के बाद मलेरिया, डेंगू और जलजनित बीमारियां फैल रही हैं। बढ़ता तापमान और वायु प्रदूषण श्वसन रोगों को और गंभीर बना रहे हैं। बच्चे,बुजुर्ग,निर्माण श्रमिक, खेतिहर मजदूर और खुले में काम करने वाले लोग सबसे अधिक जोखिम में हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) चेतावनी दे चुका है कि आने वाले दशकों में जलवायु परिवर्तन सार्वजनिक स्वास्थ्य की सबसे बड़ी चुनौतियों में होगा। वर्ष 2026 की भीषण गर्मी में बिजली की रिकॉर्ड मांग और बिजली संकट ने इस चुनौती को और गहरा किया। भारत जैसे देश में यह केवल स्वास्थ्य नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा का भी प्रश्न है।

आर्थिक दृष्टि से भी जलवायु परिवर्तन विकास की गति पर सीधा प्रहार कर रहा है। बाढ़,सूखा,चक्रवात और भूस्खलन हर वर्ष अरबों रुपये की सार्वजनिक-निजी संपत्ति नष्ट कर रहे हैं। सड़कें,पुल,रेलमार्ग,बिजली व्यवस्था और औद्योगिक आपूर्ति श्रृंखलाएं बार-बार बाधित हो रही हैं। राहत और पुनर्वास पर सरकारी व्यय बढ़ रहा है, जबकि उत्पादन और श्रम क्षमता घट रही है। विश्व बैंक और आईएमएफ भी इसे केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिरता के लिए गंभीर खतरा मानते हैं। 2021 में हीट-स्ट्रेस से लगभग 159 अरब डॉलर की आर्थिक क्षति का अनुमान था,जबकि 2024-26 के अनुमानों में यह लगभग 194 अरब डॉलर तक पहुँच चुका है। घटती उत्पादकता,श्रम घंटों की हानि और बढ़ते बीमा दावे बताते हैं कि यदि जलवायु संकट पर समय रहते नियंत्रण नहीं पाया गया,तो विकास की पारंपरिक अवधारणा भी बदलनी पड़ेगी।

इन चुनौतियों के बीच यह भी सच है कि भारत ने भविष्य की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। वर्ष 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन का लक्ष्य,सौर और पवन ऊर्जा का विस्तार,हरित हाइड्रोजन मिशन, इलेक्ट्रिक वाहन नीति, जैव ईंधन को बढ़ावा और वृक्षारोपण अभियान इसी प्रतिबद्धता के प्रमाण हैं। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका और आपदा पूर्व चेतावनी प्रणालियों का सुदृढ़ीकरण भी उल्लेखनीय है। फिर भी विशेषज्ञ मानते हैं कि केवल सरकारी योजनाएं पर्याप्त नहीं होंगी। वैज्ञानिक शहरी नियोजन, प्रभावी जल निकासी,जल और वन संरक्षण, आर्द्रभूमियों की सुरक्षा तथा स्थानीय स्तर पर जलवायु-अनुकूल विकास मॉडल को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना ही इस संकट का स्थायी समाधान है।

असल प्रश्न यह नहीं है कि भारत जलवायु आपातकाल घोषित करेगा या नहीं,बल्कि यह है कि क्या हम प्रकृति की लगातार चेतावनियों को समय रहते समझ पाएंगे। विकास और पर्यावरण को विरोधी मानने की सोच अब स्वयं विकास के लिए बाधा बन चुकी है। यदि नीति-निर्माण वैज्ञानिक शोध, विश्वसनीय आंकड़ों और स्थानीय अनुभव पर आधारित हो,तो यही संकट नवाचार और सतत विकास का अवसर बन सकता है। अन्यथा चरम मौसम की घटनाएं हर वर्ष नई सुर्खियां बनेंगी और उनके पीछे छिपा आर्थिक, सामाजिक और मानवीय संकट स्थायी होता जाएगा। बदलते मौसम का सच स्पष्ट है–जलवायु परिवर्तन पर निर्णायक,वैज्ञानिक और सामूहिक कार्रवाई अब केवल पर्यावरण की नहीं, बल्कि भारत के सुरक्षित और सतत भविष्य की अनिवार्य शर्त है।

विवाहित जीवन में बढ़ता तनाव

डॉ. विजय गर्ग
मलोट,पंजाब

विवाह केवल दो व्यक्तियों का ही नहीं, बल्कि दो परिवारों,संस्कृतियों और जीवन मूल्यों का भी मिलन होता है। भारतीय समाज में विवाह को एक पवित्र और आजीवन बंधन माना गया है, जो प्रेम, विश्वास,सम्मान और आपसी समझ पर आधारित होता है। लेकिन बदलती जीवनशैली,आर्थिक दबावों और सामाजिक परिवर्तनों के कारण आज विवाहित जीवन में तनाव बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है।

आधुनिक जीवन की भागदौड़ ने पति-पत्नी के बीच बिताए जाने वाले समय को कम कर दिया है। पहले परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर बातचीत करने और सुख-दुख साझा करने का अवसर अधिक मिलता था,लेकिन आज व्यस्त दिनचर्या और कार्यस्थल की जिम्मेदारियों के कारण दंपतियों के पास एक-दूसरे के लिए पर्याप्त समय नहीं बच पाता। इससे भावनात्मक दूरी बढ़ने लगती है और छोटी-छोटी बातें भी विवाद का कारण बन जाती हैं। आर्थिक समस्याएँ भी वैवाहिक तनाव का एक प्रमुख कारण हैं। बढ़ती महंगाई, बच्चों की शिक्षा, घर का खर्च और भविष्य की सुरक्षा जैसी चिंताएँ परिवारों पर अतिरिक्त दबाव डालती हैं। जब आर्थिक मामलों में पारदर्शिता और सहयोग की कमी होती है,तब आपसी मतभेद बढ़ने लगते हैं। कई बार वित्तीय अस्थिरता रिश्तों की मधुरता को प्रभावित करती है और तनाव को जन्म देती है। समाज में बदलती भूमिकाओं और अपेक्षाओं ने भी वैवाहिक जीवन को प्रभावित किया है। आज महिलाएँ शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। यह परिवर्तन सकारात्मक है, लेकिन इसके साथ घरेलू जिम्मेदारियों के बँटवारे और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को लेकर नई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। यदि पति-पत्नी एक-दूसरे की अपेक्षाओं और जिम्मेदारियों को समझने में असफल रहते हैं,तो तनाव उत्पन्न हो सकता है।

संवाद की कमी भी वैवाहिक जीवन में बढ़ते तनाव का एक महत्वपूर्ण कारण है। स्वस्थ संबंधों की नींव खुली और ईमानदार बातचीत पर टिकी होती है। जब लोग अपनी भावनाओं,चिंताओं और अपेक्षाओं को व्यक्त नहीं कर पाते,तो गलतफहमियाँ बढ़ जाती हैं। आज सोशल मीडिया और डिजिटल उपकरणों के बढ़ते उपयोग ने भी आमने-सामने संवाद को प्रभावित किया है,जिससे भावनात्मक जुड़ाव कमजोर पड़ सकता है।

सोशल मीडिया ने वैवाहिक जीवन में नई चुनौतियाँ पैदा की हैं। लोग अक्सर दूसरों के जीवन की चमक-दमक देखकर अपने रिश्तों की तुलना करने लगते हैं। इससे अवास्तविक अपेक्षाएँ जन्म लेती हैं और असंतोष बढ़ सकता है। वास्तविकता यह है कि हर परिवार और हर रिश्ता अपनी परिस्थितियों और संघर्षों के साथ आगे बढ़ता है। सफल वैवाहिक जीवन के लिए धैर्य, समझदारी और एक-दूसरे को स्वीकार करने की भावना आवश्यक होती है।

संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति ने भी दंपतियों की जिम्मेदारियों को बढ़ाया है। पहले परिवार के बड़े-बुजुर्ग अनुभव और मार्गदर्शन प्रदान करते थे,जिससे समस्याओं का समाधान अपेक्षाकृत आसान हो जाता था। आज दंपतियों को अधिकांश निर्णय स्वयं लेने पड़ते हैं, जिससे मानसिक दबाव बढ़ सकता है। वहीं, कई बार पारिवारिक हस्तक्षेप भी तनाव का कारण बनता है, इसलिए संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव भी वैवाहिक जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कार्यस्थल का तनाव, चिंता,अवसाद और अन्य मानसिक समस्याएँ व्यक्ति के व्यवहार और रिश्तों को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे समय में एक-दूसरे का सहयोग और आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञों की सहायता लेना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विवाह परामर्श और पारिवारिक संवाद कई समस्याओं का समाधान करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद विवाह आज भी जीवन का एक महत्वपूर्ण और सुंदर संबंध है। प्रेम, विश्वास, सम्मान और त्याग की भावना किसी भी रिश्ते को मजबूत बना सकती है। यदि पति-पत्नी एक-दूसरे की भावनाओं को समझें, खुलकर संवाद करें और समस्याओं का समाधान मिलकर खोजें, तो वे कठिन परिस्थितियों का भी सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं।

अंततः, विवाहित जीवन में बढ़ता तनाव आधुनिक समाज के बदलते स्वरूप का प्रतिबिंब है। चुनौतियाँ अवश्य हैं, लेकिन वे अजेय नहीं हैं। आपसी सहयोग, धैर्य,समझदारी और प्रेम के माध्यम से वैवाहिक जीवन को सुखी, संतुलित और मजबूत बनाया जा सकता है। विवाह केवल साथ रहने का नाम नहीं, बल्कि जीवन के हर उतार-चढ़ाव में एक-दूसरे का सहारा बनने की प्रतिबद्धता भी है।

यूपी में 2027 से पहले राम के नाम पर छिड़ी नई सियासी जंग

अजय कुमार
लखनऊ,उत्तरप्रदेश

लखनऊ की सियासत में इन दिनों जो हलचल दिख रही है,वह पिछले कई बरसों से चली आ रही तस्वीर से बिल्कुल अलग है। अब तक समाजवादी पार्टी को पिछड़ा-दलित-अल्पसंख्यक यानी पीडीए के सहारे मैदान में उतरने वाली पार्टी के रूप में देखा जाता रहा है,लेकिन 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले अखिलेश यादव का रुख जिस तरह बदला है,उसने पुराने राजनीतिक समीकरणों को भी हिला दिया है। पार्टी दफ्तर में भजन-कीर्तन,सुंदरकांड का पाठ और अयोध्या-चित्रकूट से बुलाए गए साधु-संतों का आशीर्वाद लेने जैसी तस्वीरें अब सामान्य होती जा रही हैं। यही वजह है कि राजनीतिक विश्लेषक इसे अखिलेश यादव की सोची-समझी सॉफ्ट हिंदुत्व रणनीति बता रहे हैं। गौर करने वाली बात यह है कि यह बदलाव अचानक नहीं आया। बीते कुछ महीनों में अखिलेश यादव मंदिरों में दर्शन करते, ज्योतिष और धार्मिक मान्यताओं का जिक्र करते और भंडारों में शामिल होते देखे गए हैं। इटावा में केदारेश्वर मंदिर बनवाने की पहल हो या राम चरित मानस बांटने जैसे कदम, सपा मुखिया लगातार यह संदेश देने की कोशिश में हैं कि भगवान राम किसी एक पार्टी की बपौती नहीं,बल्कि पूरे समाज की आस्था हैं। साथ ही वे यह भी जोड़ते हैं कि आस्था के नाम पर राजनीति करना गलत है, जिसका सीधा निशाना सत्तारूढ़ भाजपा पर है। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस को एक खास समुदाय की पार्टी बताकर मिली सियासी बढ़त से सपा ने साफ सबक लिया है, और यही वजह है कि अखिलेश अब मुस्लिम मुद्दों पर पहले जैसी मुखरता से बचते नजर आते हैं।

राजनीतिक हलकों में इसी बदलाव को डायमंड कट्स डायमंड यानी लोहे को लोहे से काटने वाला फॉर्मूला कहा जा रहा है। मतलब साफ है, योगी आदित्यनाथ के तीखे हिंदुत्व और धार्मिक राष्ट्रवाद का जवाब अब सपा पुरानी धर्मनिरपेक्षता की भाषा से नहीं बल्कि खुद धर्म की जमीन पर उतरकर देना चाहती है। इसके पीछे तर्क यह है कि यूपी जैसे बड़े राज्य में सत्ता की चाबी बहुसंख्यक सनातनी मतदाता को नाराज करके हासिल नहीं की जा सकती। सपा की रणनीति में अयोध्या और आसपास के इलाकों के स्थानीय संत-महंत, कबीरपंथी और रैदासी परंपरा के अनुयायी, गाजीपुर-पूर्वांचल के सिद्धपीठों से जुड़े लोग अहम भूमिका निभा सकते हैं। साथ ही ज्योतिष्पीठ और गोवर्धन पीठ की तरफ से मंदिर निर्माण प्रक्रिया पर पहले उठाए गए सवालों को भी सपा वक्त-वक्त पर हवा देती रही है, ताकि सवर्ण और प्रबुद्ध तबके का एक हिस्सा भाजपा से छिटक सके। इस पूरी रणनीति को असली धार अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावे को लेकर सामने आए विवाद ने दी है। मंदिर के दान-चढ़ावे में गड़बड़ी और चोरी के आरोपों की जांच एसआईटी कर रही है, और विपक्ष इसे आस्था के नाम पर हुई वित्तीय अनियमितता बताकर सरकार को घेर रहा है। स्थानीय दुकानदारों के विस्थापन का मुद्दा भी इससे जुड़ गया है। सपा के लिए अयोध्या अब बचाव की नहीं बल्कि हमले की जमीन बन चुकी है, वहीं भाजपा इसके जवाब में अयोध्या के वैश्विक स्तर के विकास और सुंदरीकरण को अपनी उपलब्धि के तौर पर पेश कर रही है।

दूसरी तरफ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी अपने तेवर नरम नहीं होने दिए हैं। हाल ही में प्रतापगढ़ पहुंचे सीएम योगी ने करीब 384 करोड़ रुपये की 111 विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया, साथ ही बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा में 593 अंकों के साथ टॉप करने वाली स्थानीय छात्रा श्रद्धा पांडे को मंच पर सम्मानित कर आईपैड भेंट किया। जनसभा में उन्होंने वक्फ बोर्ड की जमीनों को लेकर विपक्ष पर सीधा हमला बोलते हुए कहा कि गरीबों के हक की हजारों हेक्टेयर जमीन वक्फ के नाम पर बेची गई,लेकिन कांग्रेस और सपा ने कभी इस पर सवाल नहीं उठाया। मंदिर चढ़ावे की जांच पर उन्होंने भरोसा जताया कि एसआईटी सच सामने लाकर रहेगी और दोषियों पर पहले ही कार्रवाई हो चुकी है।योगी आदित्यनाथ ने सपा और कांग्रेस को घेरते हुए यह भी याद दिलाया कि जब राम मंदिर आंदोलन चरम पर था, तब कारसेवकों पर गोली चलाने का समर्थन करने वाले लोग आज सिर्फ चुनावी फायदे के लिए धार्मिक आस्था की बात कर रहे हैं। भाजपा नेतृत्व लखनऊ के शक्ति केंद्र संयोजक सम्मेलन के जरिए पहले ही यह संकेत दे चुका है कि पार्टी विकास और हिंदुत्व के अपने मूल एजेंडे से पीछे नहीं हटेगी।

इस बीच एक तीसरा कोण भी उभर आया है। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी बहराइच से चुनावी शंखनाद कर चुके हैं और मुस्लिम राजनीति के खाली मैदान पर अपनी दावेदारी पेश कर रहे हैं। सपा का सॉफ्ट हिंदुत्व की तरफ झुकाव ओवैसी को यह मौका दे रहा है कि वे खुद को मुस्लिम समुदाय के वैकल्पिक राजनीतिक चेहरे के तौर पर पेश करें, जिससे अखिलेश की राह और जटिल हो सकती है। कुल मिलाकर 2027 का मुकाबला अब सिर्फ जातीय समीकरणों तक सीमित नहीं रह गया है। एक तरफ भाजपा विकास और कड़े हिंदुत्व की धार के साथ मैदान में है, तो दूसरी तरफ सपा पीडीए, सामाजिक न्याय और धार्मिक-सांस्कृतिक स्वीकार्यता का मिश्रण तैयार कर रही है। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि अगर सपा हिंदू मतदाताओं के एक हिस्से को साधने में कामयाब रहती है तो भाजपा के लिए यह चुनाव पहले से ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो सकता है,जबकि दूसरा पक्ष यह भी कहता है कि हिंदुत्व के मुद्दे पर भाजपा की वैचारिक पकड़ अब भी बहुत मजबूत है और सिर्फ धार्मिक प्रतीकों के सहारे उसे चुनौती देना आसान नहीं होगा। यह प्रयोग आखिरकार कितना असरदार साबित होता है, इसका जवाब तो जनता 2027 में मतदान के दिन ही देगी।

युग पुरुष स्वामी विवेकानंद जी और वर्तमान की चेतना

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा,मध्यप्रदेश

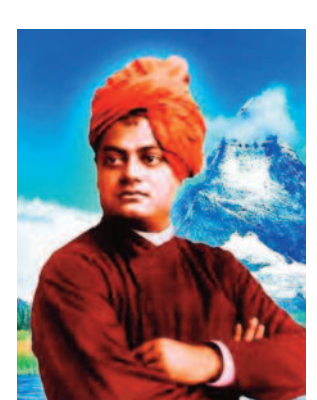

स्वामी विवेकानंद का व्यक्तित्व केवल एक संत का नहीं बल्कि एक ऐसे युगदृष्टा का था जिन्होंने सदियों आगे की चुनौतियों को भांप लिया था। आज के दौर में जब हम तकनीकी चकाचौंध और भौतिक दौड़धूप में अपना मानसिक संतुलन खो रहे हैं तब स्वामी जी की वाणी किसी मरहम की तरह है। उनकी शिक्षाओं में जो सबसे बड़ा मंत्र है वह है आत्मशक्ति का जागरण। वे कहते थे कि मनुष्य को अपने भीतर छिपे असीम सामर्थ्य को पहचानना चाहिए। आज का युवा जब अवसाद और असफलता के डर से घिरा होता है तब विवेकानंद का यह उद्घोष किउठो जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक मत रुको। सबसे बड़ी संजीवनी बन जाता है। यह वाक्य केवल किताबी उपदेश नहीं बल्कि जीवन जीने की एक पद्धति है जो हमें हार न मानने का साहस प्रदान करती है। स्वामी जी ने धर्म और विज्ञान के समन्वय पर जो जोर दिया था वह आज के वैज्ञानिक युग के लिए एक दिशा निर्देश है। उन्होंने कभी भी अंधविश्वास का समर्थन नहीं किया बल्कि विवेक और तर्क के आधार पर सत्य को परखने की बात कही। उनका मानना था कि सेवा ही नारायण की सच्ची उपासना है। दरिद्र नारायण की सेवा को ही उन्होंने धर्म का आधार बताया। आज के समाज में जहां मानवता पर स्वार्थ हावी हो रहा है वहां उनका यह संदेश कि समाज के अंतिम व्यक्ति की सेवा ही राष्ट्र निर्माण है । अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

शिक्षा के संदर्भ में उनका विचार था कि शिक्षा केवल डिग्री हासिल करने का माध्यम नहीं बल्कि मनुष्य के निर्माण का साधन है। आज की शिक्षा प्रणाली में कौशल के साथ-साथ चरित्र निर्माण का अभाव दिख रहा है। यदि विवेकानंद के विचारों को हम अपनी शिक्षण पद्धति में उतारें तो हम ऐसे नागरिकों को गढ़ सकेंगे जो न केवल बुद्धिमान होंगे बल्कि संवेदनशील भी होंगे। आज की दुनिया में जब वैचारिक मतभेद बढ़ रहे हैं और शांति के लिए जद्दोजहद जारी है तब उनके सर्वधर्म समभाव और विश्व बंधुत्व के विचार ही हमें एक सूत्र में पिरो सकते हैं । स्वामी विवेकानंद की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है बल्कि बढ़ गई है क्योंकि वे हमें सिखाते हैं कि कैसे आधुनिकता के दौर में भी अपनी जड़ों से जुड़े रहकर विश्व का नेतृत्व किया जा सकता है। स्वामी जी के विचार आज भी हमारे लिए एक ध्रुवतारे के समान हैं जो हमें भटकाव से बचाकर सही दिशा की ओर प्रेरित करते हैं। यदि हम उनके बताए मार्ग का रत्ती भर भी अनुसरण करें तो न केवल व्यक्तिगत बल्कि राष्ट्र के स्तर पर भी बड़ा बदलाव लाया जा सकता है उनका चिंतन कालजयी है जो हर दौर में मानवता का मार्गदर्शन करता रहेगा।

स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं आज के समय में कितनी आवश्यक हैं और आप उनके किस विचार से सबसे अधिक प्रभावित हैं,ये प्रश्न आपके लिए है। क्या आप स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को आत्मसात करते हैं?

मंदिर,राम सेतु और राजनीति : कैसे बदलते रहे नेताओं के सुर

संजय सक्सेना
लखनऊ,उत्तरप्रदेश

भारतीय राजनीति में भगवान राम का नाम दशकों से एक संवेदनशील और विवादित विषय रहा है। समय-समय पर अलग-अलग दलों और नेताओं के बयानों ने इस मुद्दे को गर्माया है,और हर बार यह बहस नए सिरे से शुरू हो जाती है कि कौन राम के प्रति कैसा नजरिया रखता है।2007 में केंद्र की कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने सेतुसमुद्रम शिपिंग कैनाल प्रोजेक्ट के मामले में सुप्रीम कोर्ट में एक हलफनामा दाखिल किया था। इस हलफनामे में यह तर्क दिया गया था कि रामायण और अन्य धार्मिक ग्रंथ ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं माने जा सकते,और इसलिए राम सेतु के अस्तित्व को पुरातात्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के तौर पर स्वीकार नहीं किया जा सकता। इस हलफनामे पर देशभर में भारी विरोध हुआ, जिसके बाद सरकार को इसे वापस लेना पड़ा और तत्कालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री कपिल सिब्बल ने सार्वजनिक रूप से माफी मांगी थी। इस घटना को आज भी बीजेपी और अन्य हिंदुत्ववादी संगठन कांग्रेस के खिलाफ एक प्रमुख राजनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव का नाम राम मंदिर आंदोलन के दौर से जुड़ा रहा है। 1990 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने कारसेवकों पर गोली चलवाने का आदेश दिया था, जिसे लेकर बीजेपी और हिंदुत्ववादी संगठन आज भी उन्हें निशाना बनाते हैं। संसद और सार्वजनिक मंचों पर उनके कुछ बयानों को लेकर भी विवाद हुए, जिनमें अयोध्या में राम जन्मभूमि के ऐतिहासिक प्रमाणों पर सवाल उठाने की बात कही जाती रही है। हालांकि, सपा नेता इन आरोपों को अक्सर संदर्भ से काटकर पेश किए जाने की बात कहते रहे हैं। मिले मुलायम कांशीराम, हवा में उड़ गए जय श्रीराम यह नारा 1993 के यूपी विधानसभा चुनाव के दौरान सपा-बसपा गठबंधन के खिलाफ बीजेपी और उसके समर्थकों की ओर से गढ़ा गया था, ताकि यह संदेश दिया जा सके कि सपा-बसपा गठबंधन हिंदुत्व की राजनीति के विरोध में खड़ा है। यह नारा आज भी चुनावी भाषणों में सपा को घेरने के लिए इस्तेमाल होता है।आज सपा प्रमुख अखिलेश यादव खुद को हिंदू बताते हुए मंदिरों में पूजा-अर्चना करते और जनेऊ पहनते नजर आते हैं। आलोचक इसे चुनावी रणनीति बताते हैं,जबकि सपा नेताओं का कहना है कि यह उनकी निजी आस्था है और इसे राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए।बिहार में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव पर भी बीजेपी अक्सर यह आरोप लगाती है कि उनकी पार्टी की राजनीति मुस्लिम-यादव (एमवाई) समीकरण पर आधारित है, और इस वजह से राम मंदिर जैसे मुद्दों पर उनका रुख हमेशा सतर्क और गोलमोल रहा है। राजद की ओर से इसे धर्मनिरपेक्षता की राजनीति बताया जाता है, न कि किसी धर्म-विशेष के प्रति दुराग्रह।एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी लंबे समय से बीजेपी और हिंदुत्ववादी संगठनों के निशाने पर रहे हैं।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

-सम्पादक

इलाज या कारोबार? लक्ष्मी नारायण अस्पताल पर सवालों की लंबी फेहरिस्त,अब आयुष्मान योजना में कथित धोखाधड़ी का भी मामला दर्ज

- नियमों के पालन,पार्किंग,फायर सेफ्टी,भवन अनुमति,पैथोलॉजी संचालन और पारदर्शिता पर पहले से उठ रहे थे सवाल...
- अब मरीज से नकद वसूली और आयुष्मान कार्ड से भी राशि निकालने के आरोप ने बढ़ाई गंभीरता

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 जुलाई 2026
(घटती-घटना)।
शहर के गुदरी चौक,विजय मार्ग स्थित लक्ष्मी नारायण अस्पताल एक बार फिर गंभीर आरोपों के कारण चर्चा में है। अस्पताल के संचालन को लेकर पहले से नर्सिंग होम नियमों,भवन अनुमति,फायर सेफ्टी,पार्किंग व्यवस्था, पैथोलॉजी संचालन और मरीजों को दी जाने वाली सुविधाओं पर सवाल उठ रहे थे। अब इसी अस्पताल के संचालक के खिलाफ आयुष्मान भारत योजना के नाम पर कथित धोखाधड़ी का मामला दर्ज होने के बाद पूरे प्रकरण ने नया मोड़ ले लिया है। यदि लगाए गए आरोप सही पाए जाते हैं तो यह मामला केवल एक अस्पताल तक सीमित नहीं, बल्कि गरीब मरीजों के लिए संचालित सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं की विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।

आयुष्मान कार्ड ब्लॉक बताकर नकद राशि लेने का आरोप

पुलिस में दर्ज शिकायत के अनुसार बलरामपुर जिले के ग्राम गिरवानी निवासी विवेक जायसवाल ने आरोप लगाया है कि उन्होंने अपने बड़े पिता राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल को 17 अप्रैल 2026 को पेट दर्द की शिकायत पर लक्ष्मी नारायण अस्पताल में भर्ती कराया था। शिकायत में कहा गया है कि अस्पताल प्रबंधन ने पहले इलाज आयुष्मान कार्ड से होने की बात कही, लेकिन बाद में कार्ड 'ब्लॉक' होने का हवाला देकर 1.60 लाख रुपये नकद जमा करा लिए। शिकायतकर्ता का आरोप है कि बाद में जांच करने पर पता चला कि अस्पताल ने आयुष्मान योजना से भी 1,50,460 रुपये का भुगतान प्राप्त कर लिया। साथ ही आरोप है कि नकद भुगतान का विधिवत बिल भी उपलब्ध नहीं कराया गया। पुलिस ने आवेदन के आधार पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 318(4) के तहत अपराध दर्ज कर जांच शुरू की है। मामले की सत्यता अब पुलिस जांच के बाद ही स्पष्ट होगी।

पहले से कई मुद्दों पर घेरे में था अस्पताल

अस्पताल को लेकर पहले भी कई शिकायतें सामने आती रही हैं। आरोप लगाए गए हैं कि प्रचार सामग्री में विशेषज्ञ चिकित्सकों और अत्याधुनिक सुविधाओं के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं,जबकि मरीजों का कहना है कि डॉक्टरों की नियमित उपलब्धता और ओपीडी संबंधी जानकारी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित नहीं होती। यह भी आरोप है कि कई चिकित्सक केवल 'ऑन कॉल' व्यवस्था में उपलब्ध रहते हैं।

आईसीयू,वार्ड और मूलभूत सुविधाओं पर भी उठे सवाल

स्थानीय लोगों एवं शिकायतकर्ताओं का कहना है कि अस्पताल की आईसीयू,जनरल वार्ड, टॉयलेट,बाथरूम और अन्य सुविधाएं निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं हैं। अस्पताल के अलग-अलग हिस्सों में ओपीडी,जांच और भर्ती वार्ड संचालित होने की भी चर्चा है। ऐसे में यह सवाल उठ रहा है कि क्या सभी इकाइयों के लिए आवश्यक वैधानिक अनुमति प्राप्त है।

पैथोलॉजी संचालन और नियमों के पालन पर भी प्रश्न

अस्पताल से संबद्ध प्रयाग मेडिकल एवं पैथोलॉजी लैब को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। नियमों के अनुसार पैथोलॉजी लैब का पंजीयन, योग्य पैथोलॉजिस्ट की निगरानी,प्रशिक्षित तकनीकी स्टाफ,बायोमेडिकल वेस्ट प्रबंधन तथा मूल हस्ताक्षरयुक्त रिपोर्ट अनिवार्य हैं। स्वास्थ्य विभाग भी समय-समय पर इन नियमों के पालन के निर्देश जारी करता रहा है। ऐसे में लोगों की मांग है कि संबंधित लैब की भी निष्पक्ष जांच कराई जाए।

सड़क पर पार्किंग से रोज बिगड़ती व्यवस्था

अस्पताल और मेडिकल व्यवसाय से जुड़े वाहनों के कारण मुख्य सड़क पर लगातार जाम जैसी स्थिति बनने की शिकायतें भी सामने आ रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि पर्याप्त पार्किंग नहीं होने के कारण मरीजों और आम नागरिकों दोनों को परेशानी उठानी पड़ती है। आपातकालीन वाहनों के आवागमन पर भी इसका असर पड़ सकता है।

फायर सेफ्टी पर भी गंभीर सवाल

स्वास्थ्य संस्थानों में अग्नि सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि अस्पताल में अग्निशमन व्यवस्था,आपातकालीन निकास और सुरक्षा संकेतकों की स्थिति की भी स्वतंत्र जांच होनी चाहिए। किसी भी दुर्घटना की स्थिति में मरीजों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

जांच टीम बनी,लेकिन रिपोर्ट का इंतजार

आरटीआई कार्यकर्ता एवं अधिवक्ता डॉ. डी.के. सोनी की शिकायत पर नगर निगम ने मार्च 2026 में जांच टीम गठित की थी। टीम को भवन अनुमति,निर्माण और संचालन संबंधी तथ्यों की जांच कर रिपोर्ट देने के निर्देश दिए गए थे। लेकिन कई महीने बाद भी जांच रिपोर्ट और उसके आधार पर हुई कार्रवाई सार्वजनिक नहीं होने से सवाल उठ रहे हैं कि आखिर जांच का निष्कर्ष क्या रहा।

आवासीय अनुमति पर व्यावसायिक संचालन का आरोप

शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि जिस भवन को आवासीय अनुमति मिली थी,वहां वर्तमान में अस्पताल संचालित किया जा रहा है। साथ ही सेटबैक, पार्किंग,रेन वाटर हार्वेस्टिंग और अन्य निर्माण संबंधी शर्तों के पालन पर भी प्रश्न उठाए गए हैं।

जनहित के सवाल

- यदि आयुष्मान कार्ड से भुगतान लिया गया तो मरीज से नकद राशि क्यों ली गई?
- क्या नकद भुगतान की विधिवत रसीद और बिल जारी किए गए?
- अस्पताल के प्रचार में दिखाए गए सभी विशेषज्ञ चिकित्सक नियमित रूप से उपलब्ध हैं?
- क्या भवन और अस्पताल संचालन सभी वैधानिक अनुमतियों के अनुरूप है?
- क्या फायर सेफ्टी,पार्किंग और पैथोलॉजी संचालन के मानकों का पालन हो रहा है?
- नगर निगम और स्वास्थ्य विभाग की जांच रिपोर्ट सार्वजनिक क्यों नहीं की गई?

निष्पक्ष जांच की मांग...

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि पूरा मामला सीधे मरीजों के हित और सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं से जुड़ा है। इसलिए स्वास्थ्य विभाग,नगर निगम,पुलिस और जिला प्रशासन को सभी आरोपों की निष्पक्ष एवं समयबद्ध जांच कर तथ्य सार्वजनिक करने चाहिए। यदि आरोप निराधार हैं तो अस्पताल प्रबंधन का पक्ष सामने आना चाहिए और यदि अनियमितताएं पाई जाती हैं तो नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए, ताकि स्वास्थ्य सेवाओं पर जनता का विश्वास बना रहे।

करधोनी में 70 एकड़ वन भूमि पर अतिक्रमण,तीन दिन का अल्टीमेटम

नोटिस जारी,समय सीमा में कब्जा नहीं हटाने पर चलेगा बुलडोजर कार्रवाई की जद में हाल ही में जेल से छूटा वासेपुर का गैंगस्टर भी...

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।
करधोनी गांव में सरकारी वन भूमि पर किए गए बड़े पैमाने के अतिक्रमण के खिलाफ वन विभाग और राजस्व विभाग ने संयुक्त अभियान शुरू कर दिया है। विभागीय जांच में करीब 70 एकड़ वन भूमि पर अवैध कब्जे की पुष्टि होने के बाद संबंधित कब्जाधारियों को अतिक्रमणकारी घोषित करते हुए नोटिस जारी किए गए हैं। सभी को तीन दिनों के भीतर स्वयं अतिक्रमण हटाने का निर्देश दिया गया है।

वन विभाग और भू-अभिलेख शाखा की संयुक्त जांच में राजस्व अभिलेखों एवं दस्तावेजों के सत्यापन के बाद अतिक्रमण की पुष्टि हुई। इसके आधार पर वैधानिक कार्रवाई शुरू करते हुए कब्जाधारियों को नोटिस थमाए गए हैं। विभाग ने स्पष्ट किया है कि यदि तय समय सीमा में जमीन खाली नहीं की गई तो प्रशासन और पुलिस बल की मौजूदगी में बुलडोजर चलाकर अतिक्रमण हटाया जाएगा। सूत्रों के मुताबिक इस कार्रवाई की जद में कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनका आपराधिक रिकॉर्ड रहा है। इनमें वासेपुर का एक कुख्यात गैंगस्टर भी शामिल बताया जा रहा है,जो करीब दो माह पहले अंबिकापुर केंद्रीय जेल से रिहा हुआ था। वह जमीन फर्जीवाड़े के एक मामले में कोतवाली पुलिस की कार्रवाई के बाद केंद्रीय जेल में निरुद्ध रहा था। वन विभाग के अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि सरकारी वन भूमि पर किसी भी प्रकार का अवैध कब्जा किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा। विभाग ने कहा कि अभियान लगातार जारी रहेगा और जहां-जहां अतिक्रमण की पुष्टि होगी, वहां नियमानुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी।

बारिश में बहा पुलिया का डायवर्सन 6 गांवों का बतौली से टूटा संपर्क

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।
बतौली विकासखंड में लगातार हो रही मूसलाधार बारिश ने निर्माणाधीन पुलिया की गुणवत्ता और निर्माण की धीमी रफ्तार पर सवाल खड़े कर दिए हैं। तेज बहाव के कारण पुलिया का अस्थायी डायवर्सन पूरी तरह बह गया,जिससे ग्राम करदना सहित छह गांवों का बतौली मुख्यालय से सड़क संपर्क टूट गया है। मार्ग बंद होने से ग्रामीणों का जनजीवन

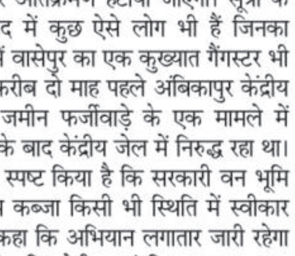

प्रभावित हो गया है और आवागमन पूरी तरह ठप हो गया है। ग्रामीणों का कहना है कि पुलिया का निर्माण कार्य पिछले पांच महीनों से अधूरा पड़ा है। समय पर निर्माण पूरा नहीं होने और ठेकेदार की लापरवाही का खामियाजा अब आम लोगों को भुगतना पड़ रहा है। डायवर्सन बह जाने से स्कूली बच्चों,किसानों और ग्रामीणों को रोजमर्रा के कार्यों के लिए भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। स्थिति यह है कि संबंधित स्कूलों के शिक्षकों को करीब तीन किलोमीटर तक कीचड़ भरे रास्ते से पैदल चलकर स्कूल पहुंचना पड़ रहा है। वहीं बड़े वाहनों की आवाजाही पूरी तरह बंद हो गई है,जिससे मरीजों को अस्पताल पहुंचाने,ग्रामीणों को तहसील और थाना आने-जाने तथा आवश्यक सामग्री के परिवहन में भी गंभीर परेशानियां उत्पन्न हो गई हैं। इस संबंध में पीएमजीएसवाई के कार्यपालन अभियंता विकास कौशिक ने बताया कि लगातार हो रही बारिश के कारण डायवर्सन बह गया है।

आवेदन पर आवेदन,कार्रवाई नहीं: अतिक्रमण से सिकुड़ी सड़क, खतरे में पूरी बस्ती

कन्या परिसर रोड के मरियमपारा में सड़क,नाली और पाइपलाइन पर निर्माण का आरोप फायर ब्रिगेड की आवाजाही पर संकट,नगर निगम से तत्काल कार्रवाई की मांग

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)।
शहर के कन्या परिसर रोड स्थित शासकीय आयुर्वेदिक अस्पताल के आगे चर्च के पास मरियमपारा की सीसी सड़क पर कथित अतिक्रमण को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े हो गए हैं। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि सड़क, नाली और पेयजल पाइपलाइन पर निर्माण कर सार्वजनिक मार्ग को इतना संकरा कर दिया गया है कि दो चारपहिया वाहन एक साथ नहीं निकल सकते। सड़क पर वाहनों की पार्किंग होने के बाद पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है। राष्ट्रीय महान गणतंत्र पार्टी के संभागीय उपाध्यक्ष राजमणि चौबे ने नगर निगम आयुक्त एवं महापौर को सौंपे आवेदन में आरोप लगाया है कि जिस अवैध निर्माण को नगर निगम ने पहले हटाया था,उसी स्थान पर फिर से कब्जा कर निर्माण कर लिया गया। आवेदन में आर.सी. पाण्डेय के घर से लेकर एस.डी. पाण्डेय (पूर्व बीईओ),अखिलेश तिवारी,अंजन सिंह और महेन्द्र शर्मा के मकानों तक सड़क और नाली पर अतिक्रमण किए जाने का उल्लेख करते हुए तत्काल कार्रवाई की मांग की गई है।

आग लगने पर कैसे पहुंचेगी दमकल? आवेदन में सबसे बड़ी चिंता अग्नि सुरक्षा को लेकर जताई गई है। कहा गया है कि यदि क्षेत्र में आगजनी जैसी कोई घटना होती है तो संकरी सड़क के कारण अग्निशमन वाहन मौके तक नहीं पहुंच पाएगा। ऐसी स्थिति में छोटी घटना भी पूरे मोहल्ले के लिए बड़ी आपदा बन सकती है। नागरिकों ने सड़क की मूल चौड़ाई बहाल कर अतिक्रमण हटाने की मांग की है।

नाली और पाइपलाइन पर भी निर्माण का आरोप : स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क के साथ-साथ नाली और पेयजल पाइपलाइन के ऊपर भी निर्माण कर दिया गया है। इससे सफाई व्यवस्था प्रभावित हो रही है और पाइपलाइन की मरम्मत या रखरखाव में भी परेशानी आती है। आरोप है कि कुछ स्थानों पर जानबूझकर सड़क पर गंदगी फैलाई जाती है, जिससे लोगों का आवागमन और कठिन हो गया है।

कई बार शिकायत,फिर भी कार्रवाई का इंतजार : राजमणि चौबे का कहना है कि इस संबंध में नगर निगम को कई बार आवेदन दिए जा चुके हैं, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उनका कहना है कि यदि भविष्य में कोई दुर्घटना होती है तो इसकी जिम्मेदारी संबंधित विभाग की भी होगी।

मुकेश फटाका एवं प्लास्टिक हाउस हादसे का दिया उदाहरण

चौबे ने कहा कि शहर पहले भी अग्निकांड की भयावह घटना देख चुका है। जय स्तंभ चौक स्थित राम मंदिर के सामने मुकेश फटाका एवं प्लास्टिक हाउस में आग लगने के दौरान दमकल को पहुंचने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था। उनका कहना है कि यदि शहर की संकरी गलियों और अतिक्रमण पर समय रहते कार्रवाई नहीं हुई तो भविष्य में और गंभीर हालात बन सकते हैं।

सवाल जो जवाब मांगते हैं...

- जिस अतिक्रमण को पहले हटाया गया था,वह दोबारा कैसे खड़ा हो गया?
- यदि सड़क,नाली और पाइपलाइन पर निर्माण हुआ है तो जिम्मेदार अधिकारियों ने समय रहते कार्रवाई क्यों नहीं की?
- क्या नगर निगम ने संबंधित स्थल का हालिया निरीक्षण कराया है?
- शहर की संकरी गलियों का फायर सेफ्टी ऑडिट कब होगा?
- जनहित के आवेदनों पर कार्रवाई में इतनी देरी क्यों?

भाजपा सम्मेलन से शाला प्रवेश उत्सव तक सक्रिय रहे मंत्री राजेश अग्रवाल

ओबीसी मोर्चा की बैठक में बूथ सशक्तिकरण का मंत्र,स्कूल में छात्राओं को बांटी साइकिलें

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 जुलाई 2026
(घटती-घटना)।
छत्तीसगढ़ शासन के पर्यटन, संस्कृति,धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री राजेश अग्रवाल मंगलवार को शहर में आयोजित दो महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में शामिल हुए। उन्होंने पहले भाजपा ओबीसी मोर्चा की प्रथम जिला कार्यसमिति बैठक एवं जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन में संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत बनाने का संदेश दिया। इसके बाद स्वामी आत्मानंद गवर्नमेंट स्कूल ऑफ एक्सीलेंस (अंग्रेजी माध्यम),ब्रह्मरोड में आयोजित शाला प्रवेश उत्सव में छात्राओं को साइकिल वितरित कर शिक्षा के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। भाजपा ओबीसी मोर्चा के सम्मेलन को संबोधित करते हुए मंत्री अग्रवाल ने कहा कि संगठन की वास्तविक ताकत उसके कार्यकर्ता हैं। केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करने, जनसंपर्क बढ़ाने और आगामी संगठनात्मक कार्यक्रमों को पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ सफल बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि ओबीसी समाज के सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता और राष्ट्र निर्माण में भाजपा हमेशा अग्रणी रही है। सम्मेलन में बूथ सशक्तिकरण, सदस्यता विस्तार,

जनसंपर्क अभियान और संगठनात्मक गतिविधियों को लेकर भी विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान विधायक प्रबोध मिंज, भाजपा जिला अध्यक्ष भरत सिंह सिसोदिया,महापौर मंजूषा भगत, प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी,बस्तर संभाग सह प्रभारी हरपाल सिंह भामरा सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे। इसके बाद मंत्री अग्रवाल शाला प्रवेश उत्सव में पहुंचे, जहां उन्होंने छात्राओं को साइकिल वितरित की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने और बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए लगातार कार्य कर रही है। साइकिल वितरण से छात्राओं को स्कूल आने-जाने में सुविधा मिलेगी और उनकी शिक्षा बाधित नहीं होगी। उन्होंने नवप्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि विद्यालय केवल पढ़ाई का स्थान नहीं, बल्कि संस्कार और व्यक्तित्व निर्माण का केंद्र है।

विद्यार्थियों से अनुशासन,नियमित अध्ययन और बेहतर भविष्य के लिए मेहनत करने का आह्वान करते हुए उन्होंने शिक्षकों की भूमिका की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को आधुनिक सुविधाओं के साथ बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया जा रहा है। कार्यक्रम के अंत में मंत्री ने विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों को नए शैक्षणिक सत्र की शुभकामनाएं दीं।

चलती बस में गूंजी किलकारी...महिला यात्रियों ने कराया सुरक्षित प्रसव,मां-बेटा दोनों स्वस्थ

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,07 जुलाई 2026
(घटती-घटना)।
मूसलाधार बारिश के बीच कोरबा से पटना जा रही एक स्लीपर बस में सोमवार रात इंसानियत और महिला शक्ति की मिसाल देखने को मिली। प्रसव पीड़ा से तड़प रही एक नवविवाहिता की मदद के लिए बस में सफर कर रही महिला यात्रियों ने आगे बढ़कर बस के भीतर ही सुरक्षित प्रसव कराया। बेटे के जन्म के साथ ही बस में किलकारियां गूंज उठीं और यात्रियों का सफर खुशी के माहौल में बदल गया। जानकारी के अनुसार राजहंस स्लीपर बस कोरबा से बिहार के पटना जा रही थी। अंबिकापुर से प्रतापपुर होते हुए सेमरसोत मार्ग पर पहुंचने के दौरान एक नवविवाहिता को अचानक तेज प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। महिला के पति ने तत्काल बस के परिचालक और यात्रियों को इसकी जानकारी दी। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बस को सुरक्षित स्थान पर रोका गया। बस में यात्रा कर रही सुनती देवी सहित अन्य महिला यात्रियों ने साहस और सूझबूझ का परिचय देते हुए बस

के भीतर ही सुरक्षित प्रसव कराया। कुछ ही देर में महिला ने एक स्वस्थ पुत्र को जन्म दिया। नवजात के जन्म के साथ ही बस में मौजूद यात्रियों ने राहत की सांस ली और तालियां बजाकर मां और बच्चे का स्वागत किया। कई यात्रियों ने इस भावुक और प्रेरणादायक पल को अपने मोबाइल फोन में कैद किया, जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। नवजात के जन्म की खुशी में बस में मौजूद यात्रियों ने बच्चे के पिता को शगुन के रूप में नकद राशि भेंट कर शुभकामनाएं दीं। बलरामपुर पहुंचने पर सभी यात्रियों के सहयोग से जच्चा-बच्चा को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। चिकित्सकों ने जांच के बाद मां और नवजात दोनों को पूरी तरह स्वस्थ बताया।

धान-खाद की किल्लत के बीच जिले में शुरू हुई रोपाई,खेतों में युद्ध स्तर पर जुटे किसान

बारिश से खेती को मिली रफ्तार...लेकिन डीएपी की कमी,आवारा मवेशी और झुरा धान की समस्या बनी चुनौती,मक्का और मूंगफली की बुवाई भी शुरू

-राजन पाण्डेय-

कोरिया,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। जिले में मानसून की सक्रियता के साथ खरीफ सीजन की शुरुआत हो चुकी है, 20 जून के बाद हुई अच्छी बारिश से किसानों के चेहरे खिल उठे हैं और अब जिले के सोनहत, बैकुंठपुर, पटना सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में धान की खेती युद्ध स्तर पर शुरू हो गई है, खेतों में ट्रैक्टरों की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी है,वहीं किसान और महिलाएं धान की रोपाई एवं खेत तैयार करने में दिन-रात जुटे हुए हैं, हालांकि खेती की शुरुआत के साथ ही किसानों के सामने डीएपी खाद की कमी, आवारा मवेशियों का आतंक और झुरा धान की समस्या बड़ी चुनौती बनकर खड़ी हो गई है।

खेतों में बढ़ी रौनक, रोपाई ने पकड़ी रफ्तार

अच्छी बारिश के बाद खेतों में पर्याप्त नमी आने से किसानों ने जुताई,पलेवा और रोपाई का कार्य शुरू कर दिया है, जिन किसानों ने पहले ही धान की नर्सरी (थरहा) तैयार कर ली थी,वे अब रोपाई में जुट गए हैं,अभी जिले के कुछ हिस्सों में रोपाई प्रारंभ हुई है,लेकिन अगले एक सप्ताह में यह कार्य पूरी गति पकड़ने की संभावना है, ग्रामीण इलाकों में सुबह से देर शाम तक खेतों में किसानों की चहल-पहल दिखाई दे रही है, ट्रैक्टरों से खेत तैयार किए जा रहे हैं और पारंपरिक तरीके से रोपाई का कार्य भी शुरू हो चुका है।

महिलाओं ने संभाली रोपाई की कमान

धान रोपाई के मौसम में इस बार बड़ी संख्या में महिलाएं भी खेतों में सक्रिय नजर आ रही हैं, महिलाएं सुबह घर का कामकाज निपटाने के बाद खेतों में पहुंचकर रोपाई का कार्य कर रही हैं,महिलाओं का कहना है कि खेती में हाथ बंटाने से परिवार की आय बढ़ती है और मजदूरी का खर्च भी बचता है,खेतों में महिलाओं की मेहनत खरीफ सीजन की सबसे बड़ी ताकत बनकर सामने आई है।

झुरा धान बोने वाले किसानों की बढ़ी मुश्किलें

इस वर्ष मौसम के उतार-चढ़ाव ने कई किसानों की योजना बिगाड़ दी,जिन किसानों ने बारिश का इंतजार करते हुए समय पर थरहा तैयार नहीं किया,उन्हें अब 'चोपी' विधि से बीज तैयार कर बुवाई करनी पड़ रही है,दूसरी ओर जिन किसानों ने बारिश से ठीक पहले नर्सरी तैयार की थी,वहां लगातार हुई बारिश से कई स्थानों पर बीज खराब हो गए,इससे किसानों को दोबारा बीज की व्यवस्था करनी पड़ रही है,विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसी स्थिति में किसान वैकल्पिक तकनीकों का उपयोग कर समय पर बुवाई पूरी करें।

सीधी बुवाई से लागत कम करने की सलाह-कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि वर्तमान मौसम धान की सीधी बुवाई के लिए भी अनुकूल है,इससे किसानों की लागत कम होगी और पानी की बचत भी होगी,किसानों जितेंद्र लठवाल,राजेश कंबोज और जितेंद्र शर्मा ने बताया कि लगातार हुई बारिश से खेतों में पर्याप्त नमी बनी हुई है,यदि आगामी दिनों में भी सामान्य वर्षा होती रही तो सिंचाई पर अतिरिक्त खर्च नहीं करना पड़ेगा और धान की फसल को प्राकृतिक नमी मिलती रहेगी।

धान के साथ मक्का और मूंगफली की बुवाई भी शुरू-केवल धान ही नहीं, जिले के कई क्षेत्रों में किसानों ने मक्का और मूंगफली की खेती भी शुरू कर दी है। कृषि विभाग किसानों को फसल विविधीकरण अपनाने के लिए लगातार प्रेरित कर रहा है,ताकि एक ही फसल पर निर्भरता कम हो और किसानों की आय में वृद्धि हो सके।

डीएपी खाद की कमी बनी सबसे बड़ी चिंता-खेती के सबसे महत्वपूर्ण समय पर जिले में डीएपी खाद की कमी किसानों की परेशानी बढ़ा रही है,सोनहत,रामगढ़,रजौली, सुंदरपुर,बैकुंठपुर,पटना,सलका सहित कई सहकारी समितियों में डीएपी सीमित मात्रा में उपलब्ध है, धान की रोपाई से पहले डीएपी डालना आवश्यक माना जाता है, लेकिन निर्धारित सीमा के कारण कई किसानों को जरूरत के अनुसार खाद नहीं मिल पा रही है, मजबूरी में किसान निजी दुकानों से अधिक कीमत पर खाद खरीद रहे हैं,किसानों ने मांग की है कि सहकारी समितियों में पर्याप्त मात्रा में डीएपी उपलब्ध कराया जाए तथा निजी दुकानदारों द्वारा अधिक कीमत वसूले जाने पर प्रभावी कार्रवाई की जाए।

आवारा मवेशियों ने बढ़ाई किसानों की चिंता- खेती के बीच जिले में आवारा मवेशियों की समस्या भी गंभीर होती जा रही है, सोनहत और पटना क्षेत्र के किसानों का कहना है कि दिन-रात आवारा पशु धान की नर्सरी और नई रोपाई को नुकसान पहुंचा रहे हैं, कई किसानों का कहना है कि रातभर खेतों की रखवाली करनी पड़ रही है,फिर भी कुछ ही घंटों में पूरी नर्सरी बर्बाद हो जाती है,किसानों ने प्रशासन से आवारा मवेशियों की रोकथाम के लिए ठोस व्यवस्था करने की मांग की है।

कृषि विभाग किसानों को कर रहा जागरूक

जिला प्रशासन के निर्देश पर कृषि विभाग की टीम लगातार गांवों का भ्रमण कर किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों,गुणवत्तापूर्ण बीज, संतुलित उर्वरक उपयोग तथा शासन की योजनाओं की जानकारी दे रही है, बीज एवं अन्य कृषि सामग्री प्राप्त करने वाले किसानों ने बताया कि शासन की योजनाओं से खेती की लागत कम करने में मदद मिल रही है और समय पर मार्गदर्शन मिलने से खेती आसान हो रही है।

किसानों की उम्मीद अच्छी बारिश और समय पर खाद पर टिकी

किसानों का कहना है कि यदि आने वाले दिनों में नियमित बारिश होती रही, डीएपी खाद की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की गई और आवारा मवेशियों पर नियंत्रण हुआ,तो इस वर्ष जिले में धान का उत्पादन बेहतर रहने की पूरी संभावना है, फिलहाल खेतों में किसान पूरे उत्साह के साथ खरीफ सीजन की तैयारी में जुटे हैं, लेकिन उनकी निगाहें अब मौसम और खाद की उपलब्धता पर टिकी हुई हैं।

पुलिस वाहन चालक और उसकी पत्नी पर धोखाधड़ी का केस....डीजीपी के आदेश के बाद दर्ज हुई एफआईआर,पीड़िता का दावा- कई अन्य लोग भी बने शिकार

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। सरगुजा पुलिस में पदस्थ एक आरक्षक और उसकी पत्नी पर 30 लाख रुपये की कथित धोखाधड़ी का मामला दर्ज होने के बाद पुलिस विभाग की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े होने लगे हैं। आरोप है कि पुलिस विभाग में वाहन चालक के रूप में पदस्थ आरक्षक ने अपनी सरकारी पहचान और प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए एक महिला से जमीन खरीदने और पीडब्ल्यूडी के लंबित भुगतान का झांसा देकर 30 लाख रुपये उधार लिए। रकम लौटाने के नाम पर दिए गए दो चेक भी बैंक से बाउंस हो गए। शिकायत के बाद डीजीपी के निर्देश पर मामला दर्ज किया गया है। मामले के अनुसार पटपरिया (गांधीनगर) निवासी अनुपमा सिंह, जो 'अनुपमा मेक ओवर' नाम से ब्यूटी पार्लर संचालित करती हैं, ने शिकायत में बताया कि वर्ष 2023 में उनकी पहचान आरक्षक प्रवीण प्रताप सिंह और उसकी पत्नी अलका प्रताप सिंह से थी। दोनों ने विश्वास में लेकर कहा कि जमीन खरीदने के लिए तत्काल पैसों की जरूरत है। साथ ही यह भी दावा किया कि पीडब्ल्यूडी मुख्यालय रायपुर से 75 लाख रुपये का भुगतान जल्द मिलने वाला है, जिसके बाद पूरी राशि लौटा दी जाएगी। इसी भरोसे में आकर पीड़िता ने 11 जुलाई से 30 जुलाई 2023 के बीच अलग-अलग किश्तों में कुल 30 लाख रुपये आरोपियों को दे दिए।

10 लाख लौटाए,20 लाख के बदले दिए दो चेक... दोनों हुए बाउंस...

शिकायत के अनुसार लंबे समय तक टालमटोल के बाद आरोपियों ने मार्च 2025 तक केवल 10 लाख रुपये लौटाए। शेष 20 लाख रुपये के एवज में 10-10 लाख रुपये के दो चेक दिए गए, लेकिन बैंक में प्रस्तुत करने पर दोनों चेक अनादृत (डिशऑनर) हो गए। पीड़िता का आरोप है कि कानूनी नोटिस भेजने के बाद आरोपियों ने पैसे लौटाने से इनकार कर दिया और पुलिस विभाग में अपनी पकड़ का हवाला देते हुए झूठे मामलों में फंसाने तथा जान से मारने की धमकी भी दी।

अन्य लोगों से भी करोड़ों नहीं, लाखों की ठगी के आरोप : शिकायत में यह भी उल्लेख किया गया है कि आरोपियों ने कथित रूप से शहर के अन्य लोगों से भी इसी तरह रकम ली। पीड़िता ने दावा किया है कि मृत्युंजय गुप्ता से 10 लाख रुपये, विवेक तिवारी से 4.30 लाख रुपये तथा जनजीत सिंह से 4.50 लाख रुपये भी इसी प्रकार लिए गए। हालांकि इन मामलों की पुष्टि पुलिस जांच के बाद ही स्पष्ट होगी।

डीजीपी के निर्देश के बाद दर्ज हुई एफआईआर : पीड़िता की शिकायत पर डीजीपी के निर्देश के बाद थाना अंबिकापुर देहात (गांधीनगर) में एफआईआर क्रमांक 0424/2026 दर्ज की गई है। आरोपियों के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा 420 और 34 के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया है। मामले की विवेचना सहायक उपनिरीक्षक बीरेंद्र कुजुर कर रहे हैं।

सबसे बड़ा सवाल

यह मामला केवल आर्थिक धोखाधड़ी तक सीमित नहीं है। सवाल यह भी है कि यदि शिकायत के अनुसार एक पुलिसकर्मी अपनी सरकारी पहचान और प्रभाव का उपयोग कर लोगों का विश्वास जीतकर रकम लेता है, तो ऐसी गतिविधियां लंबे समय तक विभाग की नजर से कैसे बचीं? यदि अन्य लोगों से भी इसी प्रकार रकम लेने के आरोप सही पाए जाते हैं,तो यह एक संगठित आर्थिक अपराध का रूप ले सकता है। अब जांच से यह स्पष्ट होगा कि आरोपियों ने कितने लोगों से इस तरह रकम ली और क्या विभागीय स्तर पर भी उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

सूचना/ईश्तहार

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी पुत्रीं कलेश्वरी / Kaleshwari पिता का नाम स्व. रतन सिंह, पता पलका थाना व तहसील उदयपुर जिला सरगुजा छ0ग0 की स्थायी निवासी है। मेरी पुत्री के आधार संख्या 8427 2693 6988 में उसकी जन्म तिथि 01.01.2011 अंकित है जिसको अपडेट कराने पर आधार कार्ड में जन्म तिथी 15.05.2008 अंकित हो गया है जो गलत है। मेरी पुत्री का वास्तविक जन्म तिथि 01.01.2011 है जो उसके जन्म प्रमाण पत्र एवं समस्त शैक्षणिक पमाण पत्र में दर्ज है। मैं यह घोषणा करती हूँ कि मेरी पुत्री को उसके गलत जन्म तिथि 15.05.2008 के जगह पर वास्तविक जन्मतिथी 01.01.2011 को आधार कार्ड में सुधार कर दर्ज किये जाने बावत सक्षम अधिकारी के समक्ष आवेदित किया गया है,अगर किसी को आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर आपत्ति दर्ज करावे।

स्थान - अम्बिकापुर

दिनॉक-

आवेदिका
बन्धानो श्याम
मो0 नं0- 8435194461

न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर, जिला-सरगुजा (छ0ग0)

रा0प्र0क्र0 202503020700041/अ-27/2024-25

फर्द बटवारा का अंतिम प्रकाशन

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि इस न्यायालय के रा0प्र0क्र 202503020700041/अ-27/2024-25 पक्षकार रमेश प्रति रामलाल वगै. में ग्राम लक्ष्मीपुर स्थित खसरा नंबर 17, 241, 242, 243, 458 रकबा 1.189, 0.008, 0.077, 0. 077, 0.660 हे. भूमि का फर्द बंटवारा सूची हल्का पटवारी से प्राप्त हुआ है, जिसका अंतिम प्रकाशन कराया जा रहा है। अतः उक्त फर्द बंटवारा में किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 20/07/2026 को न्यायालय में स्वंय अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर दावा आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। समय सीमा के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक 06/07/2026 को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील

तहसीलदार
,अंबिकापुर जिला-सरगुजा (छ.ग.)

न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा

ईश्तहार

रा0प्र0क्र0-/अ-6/2025-26

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक विजय जायसवाल आ.स्व. राजेन्द्र जायसवाल, उम्र-42 वर्ष, निवासी स्कूल रोड़ बौरीपारा था0तह0 अम्बिकापुर, जिला सरगुजा छ0ग0 के द्वारा तदाशय का आवेदन प्रस्तुत किया गया है, कि रंजीता जायसवाल आ0 राजेन्द्र जायसवाल के संयुक्त स्वामित्व व अधिपत्य की नगर अ0पुर मोहल्ला स्कूल रोड बौरीपारा स्थित नजूल भूमि प्लॉट नंबर 1795/2,1796/3,1798/3,1799/3, 1801/4836/14 रकबा क्रमशः 0.02, 0.04, 0.07, 0.03,0.01 1/2 ऐ0 भूमि है। उक्त भूमि के राजस्व अभिलेखों में खातेदार रंजीता जायसवाल का नाम त्रुटिवश सरिता पिता राजन्द्र जायसवाल अंकित हो गया है. जिसे सुधार किये जाने हेतु खातेदार रंजीता जायसवाल के आधार कार्ड एवं शैक्षणिक प्रमाण-पत्र की छायाप्रति गय दस्तावेज सहित आवेदन पत्र अन्तर्गत धारा 115 छ.ग. भू-राजस्व संहिता 1959 के तहत प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त सबंध में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो वे अपना लिखित दावा/आपत्ति स्वंय अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक-22/07/2026 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त दावा/अपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक-07/07/2026 को मेरे न्यायलयीन मुद्रा एंव हस्ताक्षर से जारी किया गया।

सील

नजूल अधिकारी
,अंबिकापुर

न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा

ईश्तहार

रा0प्र0क्र0-/अ-6/2025-26

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदकगण श्रीमती सूरजमुखी जायसवाल पति स्व. जितेन्द्र जायसवाल, श्री रमन जायसवाल, श्रीमती उषा जायसवाल, श्रीमती आशा जायसवाल, श्रीमती नीतू जायसवाल, श्रीमती एकता जायसवाल आ.स्व. जितेन्द्र जायसवाल, निवासी स्कूल रोड़ बौरीपारा था0तह0 अम्बिकापुर, जिला सरगुजा छ0ग0 के द्वारा तदाशय का आवेदन प्रस्तुत किया गया है, कि आवेदकगण के पति / पिता के संयुक्त स्वामित्व व अधिपत्य की नगर अ0पुर मोहल्ला स्कूल रोड़ बौरीपारा स्थित नजूल भूगि प्लॉट नंबर 1795/2. 1796/3, 1798/3, 1799/3, 1801/4836/14 रकबा क्रमशः 0.02, 0.04, 0.07, 0.03, 0.01 1/2 ऐ0 भूमि है। भूधारक जितेन्द्र जायसवाल आ.स्व. रामचन्द्र जायसवाल की मृत्यु दिनांक 25.12.2019 को हो चूकी है, जिसके पश्चात् आवेदकगण द्वारा आवेदित भूमि से उनका नाम विलोपित करते हुये स्वयं के नाम से फौति नामांतरण चाहा गया है। इसी प्रकार सह खातेदार श्रीमती माधुरी जायसवाल पति स्व. राजेन्द्र जायसवाल की भी मृत्यु दिनांक 27.09.2020 को हो गई है। अतः सह खातेदार जितेन्द्र जायसवाल आ.स्व. रामचन्द्र जायसवाल की मृत्यु हो जाने उपरांत उनका नाम नजूल अभिलेख से विलोपित करते हुये फौति नामांतरण किये जाने एवं सह खातेदार श्रीमती गाधुरी जायसवाल का नाम आवेदित भूमि के नजूल अभिलेख से विलोपित किये जाने हेतु आवेदकगण द्वारा मृत्त खातेदारों के मृत्यु प्रमाण पत्र की छायाप्रति मय दस्तावेज सहित आवेदन पत्र अन्तर्गत धारा 109, 110 छ.ग. भू-राजस्व संहिता 1959 के तहत प्रस्तुत किया गया है। अतः उक्त सबंध में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो वे अपना लिखित दावा/आपत्ति स्वंय अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक-22/07/2026 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकतें हैं। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त दावा/अपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक-07/07/2026 को मेरे न्यायलयीन मुद्रा एंव हस्ताक्षर से जारी किया गया।

सील

नजूल अधिकारी
,अंबिकापुर

करोड़ों की परियोजना के बीच ठेकेदार के भरोसे बिजली विभाग,जनता बेहाल

करोड़ों की आरडीएसएस योजना पर सवाल,घंटों बिजली गुल,गुणवत्ता और निगरानी पर उठे गंभीर प्रश्न

बिजली सुधार योजना बनी मुसीबत,सूरजपुर में रोज घंटों कटौती,आरडीएसएस कार्यों पर सवालों की बौछार

ठेकेदार चला रहा व्यवस्था, अधिकारी मौन? आरडीएसएस कार्यों के बीच चरमराई बिजली व्यवस्था

खंभे-तार तो लग रहे, लेकिन अंधेरे में डूबा शहर...आरडीएसएस योजना की जमीनी हकीकत पर सवाल

करोड़ों खर्च,फिर भी बिजली संकट बरकरार,आरडीएसएस कार्यों से ज्यादा बढ़ी जनता की परेशानी

आरडीएसएस योजना में गुणवत्ता पर सवाल, घंटों बिजली गुल...अब श्रम मानकों पर भी उठे प्रश्न

20 दिनों से खंभे-तार और ट्रांसफार्मर लगाने के कार्य के बीच शहर झेल रहा अघोषित बिजली

कटौती,गुणवत्ता,स्थल चयन और निगरानी पर उठे गंभीर सवाल

4 से 8 घंटे तक बिजली गुल रहने से आम जनता,व्यापारी,छात्र और मरीज परेशान

करोड़ों की योजना के बावजूद उपभोक्ताओं को नहीं मिल रही राहत

विभागीय समन्वय और परियोजना की निगरानी पर स्थानीय लोगों ने उठाए सवाल

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। बिजली व्यवस्था को मजबूत बनाने और उपभोक्ताओं को बेहतर एवं निर्बाध विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शुरू की गई आरडीएसएस योजना सूरजपुर जिले में इन दिनों चर्चा का विषय बनी हुई है, योजना का उद्देश्य पुराने विद्युत ढांचे का आधुनिकीकरण, जर्जर तारों का प्रतिस्थापन,नए विद्युत पोल एवं ट्रांसफार्मर स्थापित करना तथा भविष्य की बढ़ती मांग के अनुरूप वितरण व्यवस्था को मजबूत बनाना है,लेकिन जिले में योजना के क्रियान्वयन को लेकर जिस प्रकार की शिकायतें सामने आ रही हैं,उससे यह सवाल उठने लगे हैं कि आखिर करोड़ों रुपये खर्च होने के बाद भी उपभोक्ताओं को राहत क्यों नहीं मिल रही? पिछले लगभग 20 दिनों से शहर और आसपास के क्षेत्रों में लगातार बिजली बाधित रहने की शिकायतें सामने आ रही हैं,कई मोहल्लों में प्रतिदिन चार,पांच,छह और कभी-कभी आठ घंटे तक बिजली आपूर्ति प्रभावित रहने से आमजन का धैर्य जवाब देने लगा है,लोगों का कहना है कि बिजली बंद करने से पहले न तो कोई सार्वजनिक सूचना जारी की जाती है और न ही यह बताया जाता है कि बिजली कब तक बहाल होगी। परिणामस्वरूप व्यापार,शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और घरेलू जीवन सभी प्रभावित हो रहे हैं।

मेंटेनेंस के नाम पर रोज घंटों कटौती, आखिर कब तक?-

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि विभाग लगभग रोज किसी न किसी हिस्से में बिजली बंद कर कार्य कराने की बात कहता है, यदि यह कार्य वास्तव में नेटवर्क सुधार के लिए हो रहे हैं तो उनकी जानकारी पहले से सार्वजनिक क्यों नहीं की जाती? लोगों का आरोप है कि बिना पूर्व सूचना घंटों बिजली बंद रखना उपभोक्ताओं के अधिकारों की अनदेखी है, सोमवार को भी शहर के पुराना बस स्टैंड, पुराना अस्पताल, बाजार पारा सहित अनेक क्षेत्रों में लगभग आठ घंटे तक बिजली आपूर्ति बाधित रही, समाचार लिखे जाने तक कई क्षेत्रों में बिजली बहाल नहीं हो सकी थी, व्यापारियों के प्रतिष्ठान प्रभावित हुए, विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित हुई, मरीजों को परेशानी हुई और घरेलू उपभोक्ताओं के दैनिक कार्य ठप पड़ गए।

सबसे बड़ा सवाल-यदि डीई को जानकारी नहीं थी, तो व्यवस्था कौन देख रहा था?-

घटना के दौरान जब विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों से संपर्क किया गया तो विभागीय समन्वय की स्थिति भी सवालों के घेरे में आ गई, कार्यपालन स्तर के अधिकारी ने बताया कि उन्हें स्वयं इस कटौती की जानकारी नहीं थी और वे संबंधित सहायक अभियंता से बात करेंगे, यदि जिले के जिम्मेदार अधिकारी को ही यह जानकारी नहीं कि शहर के बड़े हिस्से में घंटों से बिजली बंद है, तो यह केवल तकनीकी समस्या नहीं बल्कि प्रशासनिक समन्वय की कमी का भी संकेत माना जा रहा है।

20 दिनों से चल रहा कार्य,लेकिन व्यवस्था लगातार बिगड़ती जा रही...

आरडीएसएस योजना के तहत जिले में बड़े पैमाने पर नए बिजली पोल, जर्जर तारों का प्रतिस्थापन और नए ट्रांसफार्मर लगाए जा रहे हैं, यह कार्य एक निजी कार्यदायी एजेंसी के माध्यम से कराया जा रहा है तथा परियोजना की निगरानी के लिए अलग अधिकारी भी नियुक्त किए गए हैं, लेकिन स्थानीय लोगों का कहना है कि पिछले लगभग 20 दिनों से चल रहे कार्यों के दौरान बिजली व्यवस्था लगातार बिगड़ती जा रही है, उपभोक्ताओं का प्रश्न है कि यदि योजना का उद्देश्य व्यवस्था सुधारना है,तो निर्माण कार्य के दौरान भी उपभोक्ताओं को न्यूनतम असुविधा सुनिश्चित करने की व्यवस्था क्यों नहीं बनाई गई?

स्थल चयन पर उठ रहे सवाल

योजना के तहत लगाए जा रहे ट्रांसफार्मरों और बिजली खंभों के स्थल चयन को लेकर भी स्थानीय स्तर पर अनेक प्रश्न उठाए जा रहे हैं, लोगों का कहना है कि जिन क्षेत्रों में वर्षों से कम वोल्टेज,ओवरलोडिंग और ट्रांसफार्मर जलने जैसी समस्याएं बनी हुई हैं,वहां अपेक्षित क्षमता के ट्रांसफार्मर अब भी नहीं लगाए गए हैं,वहीं कुछ ऐसे स्थानों पर भी नए पोल और ट्रांसफार्मर लगाए जाने की चर्चा है,जहां उनकी तत्काल आवश्यकता कम बताई जा रही है,इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है,लेकिन नागरिकों ने विभाग से स्थल चयन के तकनीकी आधार को सार्वजनिक करने की मांग की है।

क्या 25 केवीए ट्रांसफार्मर भविष्य की जरूरत पूरी कर पाएंगे?

कई उपभोक्ताओं ने यह भी सवाल उठाया है कि जहां विद्युत भार पहले से अधिक है,वहां 25 केवीए क्षमता वाले ट्रांसफार्मर लगाने का निर्णय कितना व्यावहारिक है, विद्युत क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि ट्रांसफार्मर की क्षमता का निर्धारण वर्तमान लोड के साथ-साथ भविष्य की मांग को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए,यदि क्षमता का सही आकलन नहीं किया गया तो कुछ समय बाद फिर ओवरलोडिंग और बार-बार फॉल्ट की समस्या सामने आ सकती है।

गोपालपुर फीडर परिवर्तन पर भी उठे सवाल

सूरजपुर नगर पालिका के वार्ड क्रमांक-1 गोपालपुर की बिजली आपूर्ति व्यवस्था में हुए परिवर्तन को लेकर भी लोगों में असंतोष दिखाई दे रहा है, स्थानीय नागरिकों का कहना है कि वर्षों तक यह क्षेत्र शहर के विद्युत नेटवर्क से जुड़ा रहा। अब इसे दूसरे फीडर से जोड़ने के निर्णय के बाद लोगों को नई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, विभाग का कहना है कि यह निर्णय तकनीकी कारणों और लोड प्रबंधन के लिए लिया गया, जबकि नागरिक मांग कर रहे हैं कि इस निर्णय के तकनीकी कारणों को सार्वजनिक किया जाए।

गुणवत्ता नियंत्रण सबसे बड़ा प्रश्न

योजना के अंतर्गत लगाए जा रहे बिजली खंभों,तारों और ट्रांसफार्मरों की गुणवत्ता को लेकर भी चर्चा हो रही है,स्थानीय लोगों का कहना है कि इतने बड़े पैमाने पर हो रहे कार्यों में स्वतंत्र गुणवत्ता परीक्षण आवश्यक है,यदि सामग्री की गुणवत्ता या निर्माण प्रक्रिया में किसी प्रकार की कमी रह गई तो कुछ वर्षों बाद यही परियोजना फिर मरम्मत और अतिरिक्त खर्च का कारण बन सकती है, विशेषज्ञों का भी मानना है कि किसी भी विद्युत परियोजना में केवल निर्माण कार्य पूरा कर देना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि सामग्री की गुणवत्ता, सुरक्षा मानकों का पालन और तकनीकी परीक्षण समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं।

आरडीएसएस योजना में किसकी क्या जिम्मेदारी?

स्थानीय स्तर पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार परियोजना के विभिन्न चरणों के लिए अलग-अलग स्तर पर जिम्मेदारियां निर्धारित हैं, परियोजना के क्रियान्वयन,तकनीकी समन्वय, स्थल चयन,गुणवत्ता नियंत्रण और निरीक्षण की जिम्मेदारी विभिन्न अधिकारियों और तकनीकी कर्मचारियों के बीच विभाजित होती है। स्थानीय लोगों ने परियोजना से जुड़े कार्यपालन अभियंता (परियोजना) मुकेश कुमार धुर्व,लाइनमैन (परियोजना) जी.एन. तिवारी तथा सहायक अभियंता बी.एस. मरकाम की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं,उनका कहना है कि निर्माण कार्यों की नियमित निगरानी,गुणवत्ता परीक्षण और स्थल निरीक्षण को और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। इन आरोपों पर संबंधित अधिकारियों का पक्ष लिया जाना शेष है।

व्यापारी,छात्र और मरीज सबसे ज्यादा प्रभावित

बिजली कटौती का सबसे अधिक असर छोटे व्यापारियों पर पड़ रहा है,कंप्यूटर आधारित कार्य,ऑनलाइन भुगतान,प्रिंटिंग,फोटो कॉपी, वेल्डिंग,मोबाइल रिपेयरिंग सहित अनेक व्यवसाय प्रभावित हो रहे हैं,छात्रों की ऑनलाइन पढ़ाई और परीक्षा की तैयारी बाधित हो रही है, अस्पतालों और निजी क्लीनिकों में भी बिजली बाधित होने से मरीजों को असुविधा होती है, विशेषकर जहां बैकअप व्यवस्था सीमित है।

जनता पूछ रही है-करोड़ों की योजना का लाभ आखिर कब मिलेगा?

उपभोक्ताओं का कहना है कि सरकार ने करोड़ों रुपये इसलिए खर्च किए हैं ताकि बिजली व्यवस्था मजबूत हो, लेकिन यदि निर्माण कार्यों के दौरान ही लगातार अघोषित कटौती होगी और कार्यों की गुणवत्ता पर प्रश्न उठेंगे, तो योजना का उद्देश्य प्रभावित होगा, लोग चाहते हैं कि विभाग पारदर्शिता के साथ यह बताए कहां-कहां कार्य हो रहे हैं? कितने समय तक बिजली बंद रहेगी? किन तकनीकी मानकों पर ट्रांसफार्मर लगाए जा रहे हैं? गुणवत्ता परीक्षण कौन कर रहा है? कार्य पूरा होने के बाद उसकी तकनीकी जांच कब होगी?

क्या होनी चाहिए कार्रवाई? स्थानीय नागरिकों ने मांग की है कि...

- पूरे आरडीएसएस कार्यों का स्वतंत्र तकनीकी ऑडिट कराया जाए।
- सामग्री की गुणवत्ता की थर्ड पार्टी जांच कराई जाए।
- ट्रांसफार्मरों एवं पोल के स्थल चयन की समीक्षा की जाए।
- अघोषित बिजली कटौती की जवाबदेही तय की जाए।
- कार्यों की प्रगति और शटडाउन की पूर्व सूचना सार्वजनिक की जाए।
- उपभोक्ताओं की शिकायतों के समाधान के लिए प्रभावी नियंत्रण कक्ष बनाया जाए।

क्या आरडीएसएस कार्य में कम उम्र के दिखने वाले श्रमिकों से भी लिया जा रहा काम?

आरडीएसएस परियोजना के तहत चल रहे कार्यों के दौरान एक तस्वीर सामने आई है, जिसमें एक कम उम्र का दिखाई देने वाला व्यक्ति कार्यस्थल पर श्रम करता हुआ नजर आ रहा है,यदि यह व्यक्ति वास्तव में 18 वर्ष से कम आयु का है और परियोजना से जुड़े कार्य में नियोजित है,तो यह श्रम कानूनों के अनुपालन पर गंभीर सवाल खड़े करता है, स्थानीय लोगों का आरोप है कि परियोजना के दौरान श्रमिकों की आयु,सुरक्षा उपकरणों के उपयोग और श्रम मानकों के पालन की पर्याप्त निगरानी नहीं की जा रही। ऐसे में यह आवश्यक है कि संबंधित विभाग,श्रम विभाग तथा कार्यदायी एजेंसी इस मामले की जांच कर स्पष्ट करें कि तस्वीर में दिखाई दे रहा व्यक्ति कौन है? उसकी आयु क्या है? क्या वह कंपनी या उसके ठेकेदार के लिए कार्य कर रहा था? यदि हाँ,तो क्या सभी श्रम एवं सुरक्षा नियमों का पालन किया गया? यदि जांच में यह पाया जाता है कि किसी नाबालिग से प्रतिबंधित या अवैध रूप से श्रम कराया गया, तो संबंधित कानूनों के तहत कार्रवाई का प्रावधान है।

एक ही परिवार के दो शोधार्थियों ने रचा इतिहास...डॉ. नीलम मिश्रा और डॉ. महेश मिश्रा को मिली पीएचडी की उपाधि

एक ने भारत की विदेश नीति पर किया शोध,दूसरे ने यातायात जागरूकता पर,संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय ने प्रदान की डॉक्टरेट की उपाधि

-संवाददाता-

पटना/कोरिया,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। कोरिया जिले के लिए गौरव का क्षण उस समय बना जब एक ही परिवार के दो शोधार्थियों ने अलग-अलग विषयों पर उत्कृष्ट शोध कार्य कर संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा (अंबिकापुर) से डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की उपाधि प्राप्त की, ग्राम खैरी (पटना) निवासी डॉ. नीलम मिश्रा और राष्ट्रपति पदक प्राप्त ट्रैफिक मैन डॉ. महेश मिश्रा की इस उपलब्धि से पूरे क्षेत्र में खुशी का माहौल है, शिक्षा जगत,प्रशासन,पुलिस विभाग एवं सामाजिक संगठनों ने दोनों को बधाई देते हुए इसे जिले के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया है।

भारत की विदेश नीति पर शोध कर डॉ. नीलम मिश्रा बनीं डॉक्टर-ग्राम खैरी पटना निवासी डॉ. नीलम मिश्रा ने 'बदलते परिदृश्य में भारत की विदेश नीति का अध्ययन' विषय पर शोध कार्य पूर्ण कर पीएचडी की उपाधि अर्जित की, उनका शोध केंद्र शासकीय राजमोहिनी देवी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,अंबिकापुर रहा, यह शोध डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी, विभागाध्यक्ष,राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय रेवती रमण मिश्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सूरजपुर एवं अध्ययन बोर्ड अध्यक्ष (राजनीति विज्ञान),संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय के निर्देशन में संपन्न हुआ,डॉ. नीलम मिश्रा विगत 10 वर्षों से अतिथि व्याख्याता के रूप में शिक्षा क्षेत्र में सेवाएं दे रही हैं,उन्होंने शासकीय हाई स्कूल झरनापारा,कुंडेली,सावांरावां सहित विभिन्न विद्यालयों में अध्यापन किया है तथा वर्तमान में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टेंगनी में कार्यरत हैं, उन्होंने वर्ष 2019 में प्री-पीएचडी प्रवेश परीक्षा, वर्ष 2021-22 में कोर्स वर्क, वर्ष 2023 में शोध शीर्षक का पंजीयन तथा वर्ष 2026 में अंतिम मौखिक परीक्षा (वाइवा) सफलतापूर्वक पूर्ण की,बाह्य परीक्षक के रूप में प्रो. डॉ. अनुपम शर्मा (डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय,सागर) ने शोध को समकालीन एवं अत्यंत उपयोगी बताया।

वैश्विक कूटनीति में भारत की बढ़ती भूमिका का किया विश्लेषण- अपने शोध में डॉ. नीलम मिश्रा ने वर्ष 2014 के बाद भारत की विदेश नीति में आए बदलाव,वैश्विक कूटनीति में भारत की बढ़ती भूमिका,पड़ोसी देशों से संबंध,रणनीतिक साझेदारी,आर्थिक एवं सुरक्षा नीति तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

यातायात जागरूकता पर शोध कर ट्रैफिक मैन डॉ. महेश मिश्रा ने भी हासिल की पीएचडी-राष्ट्रपति पदक प्राप्त एवं 'ट्रैफिक मैन' के नाम से प्रसिद्ध डॉ. महेश मिश्रा को 'यातायात नियमों के परिपालन संबंधी जागरूकता का अध्ययन : छत्तीसगढ़ राज्य के कोरिया जिले के विशेष संदर्भ में' विषय पर शोध कार्य पूर्ण करने के बाद पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई, डॉ. महेश मिश्रा ने अपने शोध में कोरिया जिले के नागरिकों के बीच यातायात नियमों के प्रति जागरूकता, नियमों के पालन की स्थिति, सड़क दुर्घटनाओं के कारण तथा सड़क सुरक्षा को मजबूत बनाने के उपायों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन किया है, उनका शोध डॉ. रवीन्द्र नाथ शर्मा, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र, श्री साई बाबा आदर्श स्नातकोत्तर महाविद्यालय,अंबिकापुर के निर्देशन में पूरा हुआ। अंतिम वाइवा में बाह्य परीक्षक प्रो. महेश शुक्ला ने शोध को समाजोपयोगी बताते हुए कहा कि यह अध्ययन सड़क सुरक्षा एवं जनजागरूकता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

शिक्षा और समाज सेवा दोनों क्षेत्रों में सक्रिय- डॉ. महेश मिश्रा केवल शोधार्थी ही नहीं बल्कि समाजसेवी के रूप में भी जाने जाते हैं, पिछले दो दशकों से वे यातायात जागरूकता अभियान चला रहे हैं, उन्होंने अपने निजी व्यय से 500 से अधिक यातायात जागरूकता शिविर आयोजित कर 5 लाख से अधिक लोगों को सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों की जानकारी दी है, उनके इस अभियान का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी दर्ज है।

दोनों ने व्यक्त किया आभार- डॉ. नीलम मिश्रा एवं डॉ. महेश मिश्रा ने अपने शोध कार्य की सफलता का श्रेय अपने गुरुजनों, परिवार,विश्वविद्यालय प्रशासन,शोध मार्गदर्शकों, सहकर्मियों तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी लोगों को दिया। दोनों ने शोध यात्रा के दौरान मिले सहयोग के लिए विश्वविद्यालय, शोध केंद्र, प्रशासन, शिक्षा विभाग, पुलिस विभाग तथा शुभचिंतकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

क्षेत्र में खुशी का माहौल

एक ही परिवार के दो सदस्यों द्वारा अलग-अलग विषयों पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने को लेकर क्षेत्र में हर्ष का वातावरण है, शिक्षाविदों,प्रशासनिक अधिकारियों,पुलिस विभाग, जनप्रतिनिधियों, मित्रों और शुभचिंतकों ने दोनों शोधार्थियों को बधाई देते हुए इसे कोरिया जिले के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया है,दोनों के शोध को शिक्षा,नीति निर्माण और समाज के लिए उपयोगी माना जा रहा है।

CMYK

100 एकड़ से अधिक भूमि पर अब भी अतिक्रमण,छह मकान और 20 एकड़ में खेती, 11 मामलों में न्यायालय में सुनवाई,विभाग की कार्रवाई पर उठा सवाल

वन भूमि बचाने का अभियान या औपचारिकता? 300 एकड़ में अतिक्रमण,कार्रवाई सिर्फ टटिया तक सीमित

आरक्षित वन में खेती, मकान और कब्जा...वन विभाग की कार्रवाई से नहीं टूटा अतिक्रमण का जाल

वन विभाग पहुंचा,15 टटिया हटाकर लौटा... 100 एकड़ से अधिक वन भूमि पर कब्जा जस का तस

40 हजार पौधों का जंगल उजड़ा, वन विभाग ने दी चेतावनी... अतिक्रमणकारियों पर नहीं दिखा असर

आरक्षित वन भूमि पर बढ़ता कब्जा, विभाग की कार्रवाई बनी खानापूर्ति?

300 एकड़ वन भूमि पर अतिक्रमण का साम्राज्य,विभाग ने दिखाई सख्ती, कब्जे अब भी कायम

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। जिले के ग्राम पंचायत बड़सरा के पतेरापारा स्थित आरक्षित वन भूमि पर बढ़ते अतिक्रमण के खिलाफ सोमवार को वन विभाग ने अभियान चलाया, करीब 30 सदस्यीय टीम ने मौके पर पहुंचकर टटिया (बाड़) से घिरे क्षेत्र में कार्रवाई करते हुए लगभग 15 टटिया हटाई तथा ग्रामीणों को स्वेच्छा से अतिक्रमण हटाने की समझाइश दी,विभाग ने चेतावनी दी कि यदि कब्जाधारी स्वयं अतिक्रमण नहीं हटाते हैं तो उनके विरुद्ध नियमानुसार कानूनी कार्रवाई की जाएगी, अभियान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ,लेकिन स्थानीय लोगों का कहना है कि इतनी बड़ी वन भूमि पर केवल सीमित कार्रवाई से अतिक्रमण की समस्या का समाधान संभव नहीं है।

300 एकड़ आरक्षित वन भूमि पर वर्षों से बढ़ रहा अतिक्रमण-

जानकारी के अनुसार पतेरापारा स्थित लगभग 300 एकड़ आरक्षित वन भूमि लंबे समय से अतिक्रमण की चपेट में है,वन विभाग समय-समय पर कार्रवाई करता रहा है,लेकिन इसके बावजूद वन भूमि पर कब्जे का दायरा लगातार बढ़ता गया,स्थानीय लोगों का कहना है कि कई लोगों ने स्थायी रूप से भूमि पर कब्जा कर लिया है,जबकि कुछ लोगों ने खेती भी शुरू कर दी है।

40 हजार पौधे हुए बर्बाद,वृक्ष बनने से पहले ही काट डाले गए...

वन विभाग के अनुसार जिस भूमि पर आज अतिक्रमण है,वहां पूर्व में लगभग 40 हजार पौधों का रोपण कराया गया था, इनमें बड़ी संख्या में पौधे अब वृक्ष बनने की अवस्था में पहुंच चुके थे, लेकिन कथित रूप से अतिक्रमण के दौरान उन्हें काट दिया गया, पर्यावरण प्रेमियों का कहना है कि वर्षों की मेहनत और लाखों रुपये की लागत से तैयार किए गए पौधों का इस तरह नष्ट होना न केवल सरकारी संपत्ति की क्षति है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को भी बड़ा झटका है।

100 एकड़ से अधिक भूमि पर कब्जा, छह मकान और 20 एकड़ में खेती-वन विभाग के आंकड़ों के अनुसार वर्तमान में 100 एकड़ से अधिक आरक्षित वन भूमि पर कब्जा है,इस क्षेत्र में करीब छह मकान बनाए जा चुके हैं,जबकि लगभग 20 एकड़ भूमि पर धान की खेती की जा रही है,विभाग का कहना है कि आरक्षित वन भूमि पर किसी भी प्रकार का निर्माण और कृषि कार्य कानूनन प्रतिबंधित है, फिर भी लगातार अतिक्रमण बढ़ता जा रहा है।

15 टटिया हटाई,लेकिन कब्जा जस का तस-सोमवार को चलाए गए अभियान में वन विभाग ने लगभग 15 टटिया हटाई और लोगों को दोबारा बाड़ नहीं लगाने की चेतावनी दी,हालांकि ग्रामीणों का कहना है कि मौके पर बड़ी संख्या में बने अन्य कब्जों,खेतों और निर्माणों पर कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई,उनका आरोप है कि इस प्रकार की कार्रवाई केवल औपचारिकता बनकर रह जाती है,जिससे अतिक्रमणकारियों में कोई भय नहीं दिखाई देता।

11 लोगों पर पहले से दर्ज है प्रकरण-वन विभाग ने बताया कि मार्च 2026 में भाजपा मंडल अध्यक्ष सुनील साहू की शिकायत के बाद वन भूमि पर अतिक्रमण के आरोप में 11 ग्रामीणों के विरुद्ध प्रकरण दर्ज कर न्यायालय में चालान प्रस्तुत किया जा चुका है,मामला वर्तमान में न्यायालय में विचाराधीन है,विभाग का कहना है कि न्यायालय के निर्णय के आधार पर आगे बेदखली और अन्य वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

वन विभाग ने दी अंतिम चेतावनी

वन परिक्षेत्र अधिकारी उमेश वस्त्रकार ने बताया कि वन मंडलाधिकारी के मार्गदर्शन में अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाने एवं लोगों को समझाइश देने की कार्रवाई की गई है,उन्होंने कहा कि संबंधित लोगों से स्वेच्छा से कब्जा हटाने को कहा गया है,यदि ऐसा नहीं किया गया तो वन अधिनियम के तहत कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी,उन्होंने यह भी बताया कि पूर्व में दर्ज प्रकरणों में न्यायालय के आदेश के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

बड़े अभियान की मांग...नहीं तो बढ़ता रहेगा अतिक्रमण

वन भूमि पर लगातार बढ़ते कब्जे को लेकर पर्यावरण प्रेमियों और स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि विभाग वास्तव में आरक्षित वन क्षेत्र को बचाना चाहता है तो केवल प्रतीकात्मक कार्रवाई से काम नहीं चलेगा,पूरे क्षेत्र का सीमांकन कर व्यापक अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाना होगा, अवैध निर्माण हटाने होंगे और नष्ट किए गए वन क्षेत्र में दोबारा बड़े पैमाने पर पौधरोपण कर उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी,स्थानीय लोगों का मानना है कि यदि समय रहते सख्त कार्रवाई नहीं की गई तो आने वाले वर्षों में आरक्षित वन भूमि का बड़ा हिस्सा पूरी तरह अतिक्रमण की भेंट चढ़ सकता है,जिससे पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता दोनों पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा।

विकास का 'गंदा' चेहरा : लोगों की सुविधा के लिए बनी नाली,अन्नदाताओं के लिए बनी अभिशाप

स्वच्छ भारत के दावों पर सवाल, प्रशासन और जनता दोनों की लापरवाही से उपजाऊ जमीन हो रही बर्बाद

खेतों में फसलों की जगह प्लास्टिक और कांच का कचरा,नालियों का गंदा पानी बना किसानों की सबसे बड़ी मुसीबत

-राजन पाण्डेय-

सोनहत/कोरिया,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। एक ओर केंद्र और राज्य सरकारें स्वच्छ भारत मिशन,पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आय बढ़ाने के बड़े-बड़े दावे कर रही हैं,वहीं दूसरी ओर कोरिया जिले के सोनहत विकासखंड में विकास की एक ऐसी तस्वीर सामने आई है,जो इन दावों पर गंभीर सवाल खड़े करती है,सड़क किनारे लोगों की सुविधा के लिए बनाई गई नालियां अब किसानों के लिए अभिशाप बन चुकी हैं। नालियों से बहकर आने वाला प्लास्टिक,कांच की टूटी बोतलें, डिस्पोजल, पॉलीथिन और अन्य ठोस कचरा सीधे खेतों में पहुंच रहा है, जिससे उपजाऊ जमीन धीरे-धीरे कचराघर में तब्दील होती जा रही है।

नाली बनी कचरा पहुंचाने का माध्यम, खेतों में फैल रहा प्लास्टिक का साम्राज्य- सोनहत क्षेत्र में सड़क किनारे बनी नालियों की नियमित सफाई नहीं होने और कचरा प्रबंधन की उचित व्यवस्था के अभाव में प्रतिदिन बड़ी मात्रा में घरेलू कचरा बहकर किसानों के खेतों में पहुंच रहा है,नालियों के निकास सीधे खेतों की ओर होने से बारिश और बहाव के दौरान प्लास्टिक,कांच,बोतलें और अन्य अपशिष्ट उपजाऊ भूमि पर जमा हो जाते हैं, क्षेत्र से सामने आई तस्वीरें बताती हैं कि खेतों में अब फसलों से ज्यादा प्लास्टिक की परत दिखाई दे रही है, खेतों की मेड़ और तारबंदी के पास कचरे का ढेर जमा हो चुका है, जिससे खेती करना लगातार कठिन होता जा रहा है।

खेती पर संकट,किसानों की बढ़ी चिंता-स्थानीय किसानों का कहना है कि हर बारिश के बाद उनके खेतों में नया कचरा जमा हो जाता है,बुवाई से पहले खेत साफ करने में कई दिन लग जाते हैं,फिर भी पूरी तरह सफाई नहीं हो पाती,प्लास्टिक मिट्टी की उर्वरता कम कर रही है,जिससे उत्पादन पर भी असर पड़ने लगा है,किसानों का कहना है कि यह केवल सफाई की समस्या नहीं,बल्कि उनकी आजीविका पर सीधा हमला है,यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले वर्षों में खेती करना और कठिन हो जाएगा।

कांच के टुकड़ों से बढ़ा खतरा, मवेशियों की जान भी जोखिम में-नालियों के साथ खेतों में पहुंच रहे कांच के टुकड़े किसानों और मवेशियों दोनों के लिए खतरा बन गए हैं। खेतों में काम करते समय कई किसानों के पैर कांच से कट चुके हैं,वहीं खेतों में चरने वाले मवेशी चारे के साथ पॉलीथिन और प्लास्टिक निगल लेते हैं,जिससे उनके बीमार होने और मौत तक की आशंका बनी रहती है,पशु चिकित्सकों के अनुसार मवेशियों के पेट में प्लास्टिक जमा होने से गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जो कई बार जानलेवा साबित होती हैं।

स्वच्छ भारत मिशन के दावों पर उठ रहे सवाल-ग्रामीणों का कहना है कि सरकार स्वच्छता अभियान पर करोड़ों रुपये खर्च कर रही है,लेकिन जमीनी स्तर पर कचरा प्रबंधन की स्थिति बेहद खराब है, यदि नालियों की नियमित सफाई होती और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की प्रभावी व्यवस्था बनाई जाती,तो किसानों को इस समस्या का सामना नहीं करना पड़ता,लोगों का कहना है कि नालियों का निर्माण तो कर दिया गया,लेकिन उनके पानी और कचरे के सुरक्षित निस्तारण की कोई व्यवस्था नहीं बनाई गई।

किसानों ने उठाई ये प्रमुख मांगें...

- खेतों की ओर खुलने वाले नालों का रुख बदला जाए।
- खेतों में जमा प्लास्टिक और कचरे की तत्काल सफाई कराई जाए।
- नियमित नाली सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।
- ठोस अपशिष्ट प्रबंधन एवं कचरा संग्रहण की स्थायी व्यवस्था बनाई जाए।
- किसानों को हुए नुकसान का आकलन कर उचित मुआवजा दिया जाए।
- ग्रामीणों के बीच स्वच्छता और कचरा प्रबंधन को लेकर विशेष जनजागरूकता अभियान चलाया जाए।

प्रशासन और जनप्रतिनिधियों पर उपेक्षा के आरोप-

ग्रामीणों का आरोप है कि इस गंभीर समस्या की जानकारी कई बार स्थानीय अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों को दी गई, लेकिन अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं निकला, किसानों का कहना है कि हर वर्ष यही स्थिति बनती है, लेकिन कार्रवाई केवल आश्वासन तक सीमित रह जाती है।

जनता की भी जिम्मेदारी कम नहीं-

इस समस्या का दूसरा पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है, बड़ी संख्या में लोग घरेलू कचरा, प्लास्टिक, डिस्पोजल, बोतलें और अन्य अपशिष्ट सीधे नालियों में फेंक देते हैं। यही कचरा पानी के साथ बहकर किसानों के खेतों तक पहुंच जाता है, विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक आम नागरिक स्वयं जागरूक नहीं होंगे और नालियों को कूड़ेदान की तरह उपयोग करना बंद नहीं करेंगे, तब तक केवल प्रशासनिक कार्रवाई से समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं होगा।

अब प्रशासन के सामने बड़ी चुनौती- यह मामला केवल गंदगी का नहीं,बल्कि पर्यावरण संरक्षण, कृषि उत्पादन और किसानों की आजीविका से जुड़ा हुआ है, यदि समय रहते नालियों के निकास की व्यवस्था नहीं बदली गई और ठोस कचरा प्रबंधन को प्रभावी नहीं बनाया गया,तो सोनहत के उपजाऊ खेत धीरे-धीरे बंजर होने लगेंगे,किसानों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र समाधान नहीं निकला तो वे प्रशासन के खिलाफ आंदोलन करने को बाध्य होंगे,अब देखने वाली बात होगी कि स्वच्छ भारत के दावों के बीच जिम्मेदार विभाग इस गंभीर समस्या का स्थायी समाधान निकालते हैं या यह मुद्दा भी अन्य शिकायतों की तरह फाइलों में दबकर रह जाएगा।

सुपरमैन रंजीत गुप्ता की फिर कार्रवाई...श्याम लॉज से 20 नशीले इंजेक्शन के साथ युवक गिरफ्तार

एक महीने में कई गिरफ्तारियां,लेकिन सवाल वही-हर बार नया आरोपी मिल रहा,आखिर असली सप्लाई नेटवर्क कब टूटेगा?

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,07 जुलाई 2026 (घटती-घटना)। संभागीय आबकारी उड़नदस्ता प्रभारी सहायक जिला आबकारी अधिकारी सुपरमैन कहे जाने वाले रंजीत गुप्ता की टीम ने एक बार फिर नशीले इंजेक्शनों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए गंगापुर स्थित श्याम लॉज से 20 नशीले इंजेक्शन के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी साहिल तिर्की के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 22(बी) के तहत कार्रवाई कर न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। विभाग का कहना है कि पूछताछ में इंजेक्शन उपलब्ध कराने वाले व्यक्ति के संबंध में जानकारी मिली है और उसकी तलाश की जा रही है। मुखबिर की सूचना पर आबकारी टीम ने श्याम लॉज के कमरा नंबर 105 में दबिश दी, जहां से 10 नग REXOGESIC और 10 नग AVIL इंजेक्शन बरामद किए गए। कार्रवाई में आबकारी प्रधान आरक्षक अशोक सोनी तथा नगर सैनिक रणविजय सिंह और रोहित सोनवानी शामिल रहे। लेकिन इस कार्रवाई के साथ ही एक बार फिर वही सवाल खड़ा हो गया है,जो पिछले कई मामलों के बाद भी अनुत्तरित है।

लगातार कार्रवाई,लेकिन हर बार नया चेहरा : पिछले कुछ समय में संभागीय आबकारी उड़नदस्ता ने लगातार कई बड़ी कार्रवाइयों का दावा किया है।

- वाहिद अंसारी की गिरफ्तारी और उसके बाद कथित सप्लायर मोशीम अंसारी तक पहुंच।
- लुंड्रा क्षेत्र से दो कथित सप्लायरों की गिरफ्तारी।
- सूरजपुर में प्रदीप राजवाड़े के पास से 42 नशीले इंजेक्शन की बरामदगी।
- कोरिया जिले में महुआ शराब पर बड़ी कार्रवाई।
- होटल दीप में अवैध शराब बिक्री के मामले में छापेमारी।
- और अब श्याम लॉज से साहिल तिर्की की गिरफ्तारी।

लगातार हो रही इन कार्रवाइयों से यह स्पष्ट है कि विभाग सक्रिय है,लेकिन दूसरी ओर यह भी सामने आ रहा है कि हर कुछ दिनों में एक नया विक्रेता या कैरियर पकड़ में आ जाता है।

आखिर इंजेक्शन पहुंच कहां से रहे हैं?

हर मामले में बरामद होने वाले इंजेक्शन लगभग एक जैसे हैं–REXOGESIC और AVIL- हर गिरफ्तारी के बाद विभाग यह कहता है कि आरोपी से पूछताछ की जा रही है और सप्लायर की तलाश जारी है।

लेकिन लगातार मामलों के बावजूद अब तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया कि इन इंजेक्शनों की मूल सप्लाई चेन कहां से संचालित हो रही है।

- क्या ये किसी वैध मेडिकल वितरण प्रणाली से बाहर निकल रहे हैं?
- क्या किसी स्टॉकिस्ट,एजेंसी या संगठित नेटवर्क की भूमिका है?
- क्या जब्त इंजेक्शनों के बैच नंबर के आधार पर सप्लाई चेन की विस्तृत जांच की जा रही है?

इन सवालों के जवाब अब भी सामने नहीं आए हैं।

लॉज भी बन रहे हैं अस्थायी ठिकाने? श्याम लॉज से गिरफ्तारी ने एक और पहलू सामने रखा है।

- क्या शहर के कुछ लॉज,धर्मशाला या किराये के कमरे ऐसे लोगों के अस्थायी ठिकाने बनते जा रहे हैं जो नशीले पदार्थों की बिक्री करते हैं?
- यदि ऐसा है,तो क्या ऐसे प्रतिष्ठानों में ठहरने वालों का सत्यापन और निगरानी पर्याप्त है?
- यह भी जांच का विषय माना जा रहा है।

हर कार्रवाई के बाद वही दावा : हर गिरफ्तारी के बाद विभाग यह कहता है कि 'सप्लायर की तलाश जारी है' और जल्द गिरफ्तारी होगी। जनता की अपेक्षा अब केवल एक और गिरफ्तारी नहीं,बल्कि उस पूरे नेटवर्क का खुलासा है जो लगातार नए लोगों के माध्यम से नशीले इंजेक्शन बाजार तक पहुंचा रहा है। नशे के खिलाफ अभियान की वास्तविक सफलता तभी मानी जाएगी जब केवल कैरियर और फुटकर विक्रेता ही नहीं, बल्कि पूरी सप्लाई चेन, वित्तीय नेटवर्क और बड़े संचालक भी कानून के दायरे में आएंगे।

इधर सलमान खान से झगड़ा,उधर अक्षय कुमार ने बढ़ाया हाथ,आज भी खिलाड़ी की मदद को भूले नहीं हैं विवेक ओबेरॉय

सलमान खान से झगड़े के बाद जब विवेक ओबेरॉय को इंडस्ट्री से बॉयकॉट किया जा रहा था, तब अक्षय कुमार ने उनका साथ दिया था। राम गोपाल वर्मा की फिल्म कंपनी(2002) से शानदार शुरुआत करने के बावजूद,2003 में विवेक ओबेरॉय का करियर नीचे गिर रहा था। सुपरस्टार सलमान खान के साथ झगड़े के बाद उन्हें काम मिलना बंद हो गया और कई बार रिजेक्शन का सामना करना पड़ा। इस मुश्किल दौर में,उनके दोस्त और दीवाने हुए पागल (2005) में उनके साथ काम करने वाले अक्षय कुमार ने उनका साथ दिया। हाल ही में एक इंटरव्यू में विवेक ने बताया कि कैसे अक्षय ने खुद का काम उन्हें दे दिया था।

अक्षय कुमार ने विवेक को किया था कॉल विवेक ओबेरॉय ने बताया कि उन्हें अक्षय कुमार का फोन आया था,जिसमें उन्होंने पूछा कि वह घर पर क्या कर रहे हैं। विवेक ने बताया, एक दिन उन्होंने मुझे फोन किया और पूछा,तुम कहां हो? मैंने उनसे कहा कि मैं घर पर हूं और बहुत परेशान हूं। आधे घंटे बाद,वह मेरे घर आ गए। उन्होंने कहा कि वह मेरे साथ बैठकर

बात करना चाहते हैं। फिर, उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं किन परेशानियों से गुजर रहा हूं।

अक्षय ने अपना काम विवेक को दिया

उन्होंने आगे बताया,उन्होंने कहा,देखो,मैं इन सब चीजों के बारे में कुछ नहीं कर सकता, लेकिन तुम्हारी सोच को पॉजीटिव बनाने में मदद कर सकता हूं। फिर उन्होंने बताया कि कई शो हो रहे हैं, मेरे पास कई ब्लॉकबस्टर गाने हैं और वह शूटिंग में व्यस्त हैं। इसलिए, अपने व्यस्त शेड्यूल के कारण वह ये शो नहीं कर सकते, और वह ये शो मुझे दिला सकते हैं।

विवेक ओबेरॉय को हैरानी तब हुई जब अक्षय ने उन्हें अपने ही शो करने का ऑफर दिया ताकि वे खुद के बारे में अच्छा महसूस कर सकें; इससे उन्हें अपना कॉन्फिडेंस वापस पाने में मदद मिली। उन्होंने कहा, तुम इन्हें करना शुरू करो। मेरे पास जो भी इंक्वायरी आएगी, मैं तुम्हें भेज दूंगा। वे खुद ये शो नहीं करना चाहते थे और उन्होंने मुझसे इन्हें करने के लिए कहा। कमाल है! भला कोई किसी के लिए ऐसा क्यों करेगा?

विवेक ओबेरॉय को किया गया था बॉयकॉट

विवेक ने आगे कहा,उस मदद से मैंने फिर से स्टेज पर जाना शुरू किया,शो में फैन्स को देखा, उन्हें चीयर करते देखा, और मुझे एक अच्छा पॉजीटिव एहसास हुआ। मैंने पैसे भी कमाए। मेरी निराशा यह थी कि मैं फिल्में दे रहा था,वे सफल हो रही थीं, अवॉर्ड मिल रहे थे,फिर भी मुझे काम क्यों नहीं मिल रहा था? बॉयकॉट क्यों? तो, उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं तुम्हारे लिए खड़ा रहूंगा,मैं लॉबी के खिलाफ लड़ूंगा, वगैरह। उन्होंने मुझे एक आसान, प्रैक्टिकल समाधान दिया।

विवेक का वर्कफ्रंट

इस बीच, वर्क फ्रंट पर, विवेक ओबेरॉय साल की मोस्ट अवेटेड फिल्म रामायण में विभीषण का रोल निभाते हुए नजर आएंगे। यह दिवाली 2026 पर थिएटर में रिलीज होगी। जिसमें रणबीर कपूर भगवान राम और साई पल्लवी सीता के किरदार में नजर आएंगी।

वेंकीअनिल 5 के सेट पर लौटे वेंकटेश,जरूरी सीन्स के लिए टीम तैयार

इंडस्ट्री के सूत्रों की मानें तो,तेलुगु स्टार वेंकटेश अब जाने-माने डायरेक्टर अनिल रविपुडी की अगली फिल्म के सेट पर आ गए हैं, जिसे अभी वेंकीअनिल 5- एनकेआरएआर 2 के नाम से जाना जा रहा है। वेंकटेश सेट पर तब आए हैं जब यूनिट एक खास तौर पर डिज़ाइन किए गए बड़े सेट पर कई जरूरी सीन शूट करने की तैयारी कर रही है। जिन सीन को शूट किया जाना है, उनमें एक्टर नंदमुरी कल्याण राम, कीर्ति सुरेश और कृति शेट्टी भी होंगे।

कुछ दिन पहले ही,मेकर्स ने फिल्म के सेट पर केक काटकर नंदमुरी कल्याण राम का जन्मदिन मनाया था। मेकर्स ने इस मौके पर फिल्म से नंदमुरी कल्याण राम का एक स्पेशल पोस्टर भी रिलीज किया था। फिल्म को प्रोड्यूस करने वाले प्रोडक्शन हाउस में से एक, शाइन स्क्रीन स्टूडियोज़ ने अपने सोशल मीडिया टाइमलाइन पर एक्टर के जन्मदिन पर फिल्म से उनका स्पेशल पोस्टर शेयर किया था। इसमें कहा गया था,टीम वेंकीअनिल 5- एनकेआरएआर 2 अपने प्यारे नंदामुरीकालयन को जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देती है। उन्हें उनके अब तक के सबसे स्टाइलिश अवतार में पेश कर रहे हैं, जिसमें बेमिसाल एलिगेंस और स्वैग है।

हैप्पीबर्थडेएनकेआर संक्रांति 2027 रिलीज़।

इससे पहले,फिल्म एक अलर्ट के लिए खबरों में थी, जिसमें मेकर्स ने लोगों को एक फेक कास्टिंग कॉल के बारे में चेतावनी दी थी। मेकर्स ने लोगों को एक फेक कास्टिंग कॉल के बारे में सावधान किया था,जो धोखेबाजों ने किया था। अपने सोशल मीडिया टाइमलाइन पर शेयर किए गए एक बयान में, शाइन स्क्रीन स्टूडियोज़ ने कहा,हमें पता चला है कि हमारी फिल्म के नाम पर एक फेक कास्टिंग कॉल फैलाई जा रही है। हम यह साफ करते हैं कि यह कास्टिंग कॉल पूरी तरह से झूठी और बिना इजाज़त वाली है। हम सभी से रिक्वेस्ट करते हैं कि वे ऐसी धोखाधड़ी वाली एक्टिविटीज़ का शिकार न हों या फिल्म को रिप्रेजेंट करने का दावा करने वाले लोगों के साथ कोई भी पर्सनल जानकारी, फोटो, डॉक्यूमेंट या पैसा शेयर न करें। मेकर्स ने यह भी कहा, हमारी फिल्म के लिए कास्टिंग के मौकों के बारे में कोई भी ऑफिशियल अनाउंसमेंट सिर्फ हमारे वेरिफाइड और ऑफिशियल सोशल मीडिया हैंडल से ही की जाएगी। हम सभी से रिक्वेस्ट करते हैं कि वे अलर्ट रहें और सिर्फ हमारे ऑफिशियल चैनल से शेयर की गई जानकारी पर ही भरोसा करें।

बिहारियों के भौकाल ने जब हिलाया बॉक्स ऑफिस

क्राइम-राजनीति और संघर्षों को दिखाती हैं ये 7 कल्ट क्लासिक फिल्में

बिहार की राजनीति की बात हो या वहां पर होने वाले अपराध और एजुकेशन सिस्टम की बात, अलग-अलग मुद्दों पर अक्सर फिल्में बनती आई हैं। इन 7 कल्ट फिल्मों में बिहारियों का भौकाल देखने को मिला।

एक बिहारी सब पर भारी ये वन लाइनर आपने कई बार आपने सुना होगा। वह जहां जाते हैं उनका अलग अंदाज सभी का दिल जीत लेता है। पढ़ाई में अव्वल नंबर लाने हो,या फिर बदमाशी में झंडे गाढ़ने की बात हो, बिहार के चर्चे अक्सर किसी न किसी की जुबानी सुनने को मिलते हैं। बॉलीवुड में कई ऐसे सितारे हैं,जो बिहार से ताल्लुक रखते हैं। जिन्होंने हिंदी सिनेमा में एक अलग पहचान बनाई है। हालांकि, आज हम अपने इस आर्टिकल में बिहार के सितारों की नहीं, बल्कि उन फिल्मों की बात कर रहै हैं,जिनकी कहानी बिहार के बैकड्रॉप पर बनी है।

गैंग्स ऑफ वासेपुर

अनुराग कश्यप के निर्देशन में बनी फिल्म गैंग्स ऑफ वासेपुर की कहानी कभी बिहार का हिस्सा रहे धनबाद(झारखंड) के कोयला माफिया के संघर्षों को दर्शाती है। जिसमें पारिवार के बीच के मतभेद, राजनीति और रिवेंज को बड़ी ही खूबसूरती से फिल्म में उतारा गया है। जिसमें एक के बाद एक जनरेशन अपने पिता की मौत का बदला लेती है। फिल्म में मनोज बाजपेयी, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, हुमा कुरैशी और ऋचा चड्ढा जैसे सितारों ने मुख्य भूमिका निभाई थी।

अपहरण

साल 2005 में रिलीज हुई अजय देवगन और नाना पाटेकर की फिल्म अपहरण की बिहार की पृष्ठभूमि पर बनी है, जहां एक लड़का बनना तो पुलिस ऑफिसर चाहता है,लेकिन वह किडनैपिंग की दुनिया का हिस्सा बन जाता है। प्रकाश झा के निर्देशन में बनी मूवी में क्राइम और पॉलिटिक्स के कनेक्शन को बखूबी पर्दे पर उतारा गया है।

परीक्षा

साल 2020 में रिलीज हुई फिल्म परीक्षा एक रिक्शा चालक के इर्द-गिर्द घूमती है,जिसका सपना होता है कि वह अपने बच्चे को एक इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ाए और अच्छी शिक्षा दे,लेकिन उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह फिल्म गरीब बच्चों को शिक्षा व्यवस्था को लेकर गरीबों के सामने आने वाली चुनौतियों को बखूबी बयां करता है।

मांझी : द माउंटेन मैन

साल 2015 में रिलीज हुई मांझी : द माउंटेन मैन गया (बिहार) के रहने वाले दशरथ मांझी की असली कहानी है, जो पत्नी का समय पर इलाज न होने के कारण उसके निधन से काफी टूट जाया है। वह ये संकल्प लेता है कि वह इस तरह की दिक्कत किसी को नहीं आने देगा, जिसके कारण वह 22 साल तक लगातार छेनी और हथोड़े से पहाड़ों पर 360 फूट लंबा रास्ता बनाता है।

आरक्षण

प्रकाश झा ने अपने फिल्मी करियर में बिहार की पृष्ठभूमि पर बनी कई फिल्में बनाई हैं। उन्होंने साल 2011 में फिल्म आरक्षण बनाई थी,जिसमें यह दिखाया गया था कि कैसे कास्ट के आधार पर उन्हें एजुकेशन मुहैया करवाई जाती है। शिक्षा में जाति आधारित आरक्षण और छात्रों,शिक्षकों और समाज पर उनके प्रभाव को दिखाती है। इस फिल्म का थीम बिहार युवाओं के कहीं न कहीं कनेक्टेड है।

गंगाजल

इस फिल्म की कहानी एक ईमानदार पुलिस ऑफिसर की है, जिसकी पोस्टिंग बिहार के एक ऐसे जिले में होती है,जहां कानून की कोई वैल्यू नहीं है और उस डिस्ट्रिक में पूरी तरह से क्रिमिनल और पॉलिटिक्स का राज है। वह ईमानदार पुलिस ऑफिसर खुद की मनमानी करने वाले और क्राइम की दुनिया के बेताज बादशाहों से लड़ता है। यह फिल्म असली कहानी से इंस्पायर है। मूवी का निर्देशन प्रकाश झा ने किया है।

शूल

मनोज बाजपेयी स्टारर फिल्म साल 1999 में रिलीज हुई थी,जिसमें बिहार की राजनीति और अपराध का गठजोड़ किस तरह से एक ईमानदार पुलिस ऑफिसर की जिंदगी को नरक बना देता है, इसे बड़ी ही खूबसूरती के साथ मेकर्स ने बड़े पर्दे पर उतारा है। इस मूवी के निर्देशन की कमान राम गोपाल वर्मो ने संभाली थी।

खेल समाचार

टीम इंडिया को मिलेगा नया हेड कोच और कोचिंग स्टाफ

व्यस्त इंटरनेशनल कैलेंडर के कारण बीसीसीआई ने फिर से स्प्लिट-कोचिंग का रास्ता चुना है...वेस्टइंडीज सीरीज और एशियन गेम्स के एक ही समय होने के कारण मुख्य कोच गौतम गंभीर सीनियर टीम के साथ रहेंगे...जबकि सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण जिम्बाब्वे दौरे और एशियन गेम्स के लिए भारतीय टीम के कोच बनेंगे...

नई दिल्ली,07 जुलाई 2026। भारतीय क्रिकेट टीम का व्यस्त इंटरनेशनल कैलेंडर एक बार फिर कोचिंग स्टाफ में विभाजन का कारण बनने जा रहा है। बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण आगामी जिम्बाब्वे दौरे और एशियन गेम्स के लिए भारतीय टीम के मुख्य कोच की भूमिका निभाएंगे। दरअसल, एशियन गेम्स का शेड्यूल भारत के घरेलू मैदान पर वेस्टइंडीज के खिलाफ होने वाली आगामी सीरीज के शुरुआती चरण के साथ ओवरलैप कर रहा है। ऐसी स्थिति में नियमित मुख्य कोच गौतम गंभीर सीनियर नेशनल टीम के साथ भारत में ही बने रहेंगे, जबकि लक्ष्मण दो अलग-अलग स्क्वॉड को लेकर जिम्बाब्वे और जापान के लिए उड़ान भरेंगे। बता दें कि इस बार का एशियन गेम्स जापान में खेला जाना है।

सुनील जोशी और ऋषिकेश कानिटकर होंगे सपोर्ट स्टाफ का हिस्सा

जिम्बाब्वे दौरे और एशियन गेम्स के पूरे अभियान के दौरान वीवीएस लक्ष्मण को एक जाना-पहचाना और अनुभवी सपोर्ट स्टाफ मिलेगा। पूर्व भारतीय बल्लेबाज ऋषिकेश कानिटकर टीम के बल्लेबाजी कोच की जिम्मेदारी संभालेंगे, जबकि पूर्व भारतीय स्पिनर सुनील जोशी को गेंदबाजी कोच के रूप में शामिल किया गया है। यह पूरा कोचिंग ग्रुप दोनों ही दौरों पर टीम इंडिया के साथ निरंतरता बनाए रखने के लिए काम करेगा।

बीसीसीआईके लिए कुछ भी नया नहीं...

बीसीसीआई के लिए यह व्यवस्था बिल्कुल नई नहीं है। जब भी भारतीय टीम का कार्यक्रम अत्यधिक व्यस्त होता है और दो सीरीज एक ही समय पर आ जाती हैं,तो बोर्ड हमेशा सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के अनुभवी कोचों पर भरोसा जताता है। लक्ष्मण इससे पहले भी कई विदेशी दौरों पर तब मुख्य कोच की भूमिका निभा चुके हैं जब सीनियर कोचिंग स्टाफ मुख्य टीम के साथ व्यस्त था। उनसे पहले नेशनल क्रिकेट एकेडमी के पिछले प्रमुखों ने भी शेड्यूलिंग क्लैश के दौरान इसी तरह की भूमिकाएं निभाई थीं। यह ताजा फैसला आधुनिक क्रिकेट में भारतीय टीम के बढ़ते द्विपक्षीय दौरों और मल्टी स्पोर्ट्स इवेंट की भारी मांग को दर्शाता है।

2026 फीफा वर्ल्ड कप के बाद संन्यास लेंगे क्रिस्टियानो रोनाल्डो

मुंबई,07 जुलाई 2026। 23 सालों से एक व्यक्ति ने पूरे देश की उम्मीदों का बोझ उठाया है - छह यूरोपियन चैंपियनशिप, छह वर्ल्ड कप और लगभग दो दशकों तक चली कप्तानी। जब क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने पुष्टि की कि 2026 उनका आखिरी फीफा वर्ल्ड कप होगा,तो पुर्तगाल और फुटबॉल की दुनिया ने उनके लगातार और रिकॉर्ड-तोड़ने वाले लंबे करियर को सलाम किया। जेडईई3की एक रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने पहली बार 20 अगस्त 2003 को कजाकिस्तान के खिलाफ पुर्तगाल के लिए मैदान पर कदम रखा था। वे सिर्फ़ 18 साल के थे। जल्द ही उन्होंने अपना खाता खोल लिया और यूरो 2004 में ग्रीस के खिलाफ अपना पहला इंटरनेशनल गोल किया। शुरुआत से ही एक स्वाभाविक लीडर के तौर पर पहचाने जाने वाले रोनाल्डो को यूरो 2008 से पहले आधिकारिक तौर पर कप्तान बनाया गया,तब से उन्होंने इस भूमिका को पूरे गर्व के साथ निभाया है। यह मेरा आखिरी वर्ल्ड कप होगा। चलिए इसका मज़ा लेते हैं। - क्रिस्टियानो रोनाल्डो,2026 फीफा वर्ल्ड कप में स्पेन के खिलाफ पुर्तगाल के राउंड ऑफ़ 16 मुकाबले से पहले। जैसे-जैसे साल बीतते गए,उन्होंने स्कोरिंग और मैचों में खेलने के सभी बड़े रिकॉर्ड तोड़ दिए। 2014 में पाउलेटा के 47 गोल के रिकॉर्ड को पीछे छोड़कर वे पुर्तगाल के लिए सबसे ज़्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी बने। 2021 तक, वे फुटबॉल इतिहास में दुनिया के सबसे ज़्यादा इंटरनेशनल गोल करने वाले खिलाड़ी बन गए और अली दई के शानदार 109 गोल के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया।

रिकॉर्ड बुक में दर्ज हुए ये 5 भारतीय बल्लेबाज!

नई दिल्ली,07 जुलाई 2026। भारतीय क्रिकेट टीम के युवा उप-कप्तान तिलक वर्मा ने टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में एक नया इतिहास रच दिया है। इंग्लैंड के खिलाफ खेली जा रही टी20 सीरीज के दूसरे मुकाबले में शानदार बल्लेबाजी करते हुए तिलक ने सबसे कम उम्र में 1500 रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाज का गौरव हासिल कर लिया है। उन्होंने इस मामले में अपने ही साथी खिलाड़ी अभिषेक शर्मा के रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया। तिलक वर्मा ने महज 23 वर्ष की आयु में इस जादुई आंकड़े को छुआ है,जबकि इससे पहले कई बड़े दिग्गज बल्लेबाजों को इस मुकाम तक पहुंचने में लंबा वक्त लगा था।अभिषेक शर्मा का रिकॉर्ड सिर्फ दो दिन में टूटाटी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में रिकॉर्ड्स का बनना और टूटना आम बात है,लेकिन भारतीय टीम के दो युवाओं के बीच की यह जंग बेहद दिलचस्प रही। इस सिलसिले की शुरुआत एक जुलाई को हुई थी, जब धाकड़ ओपनर अभिषेक शर्मा ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी20 मैच में अपनी आतिशी पारी के दम पर 1500 रनों का आंकड़ा पार किया था। उस वक्त अभिषेक इस मुकाम पर पहुंचने वाले सबसे युवा भारतीय बने थे, लेकिन उनका यह जश्न ज्यादा दिनों तक नहीं टिक सका।महज दो दिन के भीतर ही दूसरे मैच में तिलक वर्मा ने धमाकेदार बल्लेबाजी कर अभिषेक के इस रिकॉर्ड को अपने नाम कर लिया, जो कि उनके करियर की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।दिग्गजों को छोड़ा पीछेभारतीय क्रिकेट में युवा प्रतिभाओं का दबदबा किस कदर बढ़ रहा है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि तिलक वर्मा और अभिषेक शर्मा ने इस मामले में विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे महान खिलाड़ियों को भी पीछे छोड़ दिया है। तिलक ने जहां लगभग 23 साल की उम्र में यह कारनामा किया,वहीं अभिषेक शर्मा को यहां तक पहुंचने में 25 साल से अधिक का समय लगा। इस सूची में अब किंग कोहली तीसरे पायदान पर खिसक गए हैं। युवाओं का यह शानदार प्रदर्शन भारतीय क्रिकेट के भविष्य के लिए एक बेहद सुखद संकेत है।सबसे कम उम्र में 1500 ट टी 20 आई रन बनाने वाले शीर्ष 5 भारतीयइस विशेष कीर्तिमान को अपने नाम करने वाले भारत के पांच बल्लेबाजों की सूची और उनकी उम्र का विवरण इस प्रकार है:-1. तिलक वर्मा महज 23 साल 138 दिन 2.अभिषेक शर्मा 25 साल 300 दिन (यह रिकॉर्ड सिर्फ 2 दिन टिक सका)3. विराट कोहली27 साल 143 दिन4. केएल राहुल28 साल 130 दिन5. रोहित शर्मा 30 साल 245 दिन।

जिम्बाब्वे दौरे के लिए भारतीय टीम का ऐलान,वैभव-रिंकू को मौका, सैमसन बाहर

मुंबई,07 जुलाई 2026। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने जिम्बाब्वे के खिलाफ तीन टी20 मुकाबलों की सीरीज के लिए टीम का ऐलान कर दिया है। श्रेयस अय्यर की कप्तानी में एक बार फिर 15 वर्षीय सलामी बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी को मौका दिया गया है। तिलक वर्मा टीम के उप-कप्तान होंगे।

वैभव सूर्यवंशी आयरलैंड के खिलाफ दो मुकाबलों की टी20 सीरीज का हिस्सा थे, लेकिन वहां उन्हें मौका नहीं मिल सका। इसके बाद इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी20 मैच में भी वह प्लेइंग इलेवन में शामिल नहीं थे। आखिरकार,दूसरे मुकाबले में वैभव को मौका दिया गया, जिसके साथ 15 साल और 99 दिन की उम्र में वैभव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डेब्यू करने वाले सबसे युवा भारतीय क्रिकेटर बन गए थे। हालांकि, अपने डेब्यू मैच में वैभव 14 रन ही बना सके थे।

मैच फिनिशिर रिंकू सिंह ने टी20 टीम में वापसी की है। इनके अलावा,प्रिंस यादव, यश ठाकुर और अशोक शर्मा भी भारतीय टीम का हिस्सा हैं। अशोक शर्मा ने आईपीएल 2026 में अपनी तेज रफ्तार गेंदबाजी से सुर्खियां बटोरी थीं। हर्ष दुबे और वरुण चक्रवर्ती को स्पिन गेंदबाज के तौर पर टीम में शामिल किया गया है, लेकिन इंग्लैंड दौरे पर टीम का हिस्सा रहे अक्षर पटेल और रवि बिश्नोई को मौका नहीं दिया गया। विकेटकीपिंग का जिम्मा ईशान किशन और प्रभसिमरन सिंह को सौंपा गया है। संजू सैमसन इस सीरीज से बाहर हैं। दोनों देशों के बीच 23, 25 और 26 जुलाई को हरारे स्थित हरारे स्पोर्ट्स क्लब में टी20 सीरीज के तीनों मैच खेले जाने हैं। जिम्बाब्वे के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम- श्रेयस अय्यर (कप्तान), वैभव सूर्यवंशी, अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा (उप-कप्तान), ईशान किशन (विकेटकीपर), शिवम दुबे, सूर्यांश शेडगे, रिंकू सिंह, हर्ष दुबे, वरुण चक्रवर्ती, प्रिंस यादव, यश ठाकुर, अशोक शर्मा, मयंक यादव, प्रभसिमरन सिंह (विकेटकीपर)। चयन समिति ने इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए भारतीय टीम में नितीश कुमार रेड्डी की जगह शिवम दुबे को शामिल किया है।

भारत की अपडेटेड वनडे टीम शुभमन गिल (कप्तान),रोहित शर्मा,विराट कोहली, श्रेयस अय्यर (उप-कप्तान),केएल राहुल (विकेटकीपर),ईशान किशन (विकेटकीपर),वाशिंगटन सुंदर,अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, जसप्रीत बुमराह, प्रसिद्ध कृष्णा, हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह, गुरनूर बरार, शिवम दुबे।

छत्तीसगढ़ में वक्फ बोर्ड की नई व्यवस्था लागू...अब रजिस्टर्ड मौलाना ही पढ़ा सकेंगे निकाह,ये सब भी जरूरी

रायपुर,07 जुलाई 2026। छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड ने प्रदेश में निकाह प्रक्रिया को व्यवस्थित और पारदर्शी बनाने के लिए नई व्यवस्था लागू करने का फैसला किया है। इसके तहत अब केवल वक्फ बोर्ड से पंजीकृत (रजिस्टर्ड) मौलाना ही निकाह संपन्न करा सकेंगे। साथ ही अंतरधार्मिक निकाह के मामलों में वक्फ बोर्ड से पूर्व रजिस्ट्रेशन और निर्धारित कानूनी प्रक्रिया पूरी करना अनिवार्य होगा। फर्जी पहचान, दस्तावेज छिपाकर कराए जाने वाले निकाह और विवादित मामलों पर रोक लगाने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ वक्फ बोर्ड ने नई पहल शुरू की है। वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम राज ने बताया कि अब प्रदेश में निकाह कराने वाले सभी मौलानाओं का पंजीकरण किया जाएगा और केवल बोर्ड से रजिस्टर्ड मौलाना ही निकाह पढ़ा सकेंगे। नई व्यवस्था के तहत यदि कोई मुस्लिम युवक या युवती किसी गैर-मुस्लिम से निकाह करना चाहता है, तो पहले वक्फ बोर्ड में रजिस्ट्रेशन कराना होगा। इसके लिए दोनों पक्षों की सहमति, आवश्यक दस्तावेज और सभी कानूनी औपचारिकताएं पूरी करनी होंगी। बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि बिना अनुमति निकाह पढ़ाने वाले मौलानाओं के खिलाफ भी कार्रवाई की जा सकती है। इसके अलावा निकाह के बाद जारी होने वाला प्रमाणपत्र भी वक्फ बोर्ड के माध्यम से जारी किया जाएगा और प्रत्येक निकाह का रिकॉर्ड बोर्ड के पास सुरक्षित रखा जाएगा। वक्फ बोर्ड के अनुसार, इस व्यवस्था से फर्जी पहचान के जरिए विवाह कराने, दस्तावेज छिपाने और विवादित मामलों की प्रभावी निगरानी संभव होगी। बोर्ड का कहना है कि उसे विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं को बहला-फुसलाकर विवाह करने तथा संपत्ति विवाद से जुड़े कुछ मामलों की शिकायतें मिली थीं। इन्हीं शिकायतों के मद्देनजर निकाह प्रक्रिया की निगरानी बढ़ाने और सभी निकाह का केंद्रीकृत रिकॉर्ड रखने का निर्णय लिया गया है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने राजस्व विभाग के कार्यों की उच्चस्तरीय समीक्षा की...

राज्य सरकार के नीतिगत सुधारों एवं नवाचारों से राजस्व प्रशासन में आया सकारात्मक बदलाव : मुख्यमंत्री साय

अब व्हाट्सऐप पर मिलेगी बी-1,खसरा,ऋण पुस्तिका और भूमि संबंधी जानकारी...

रायपुर,07 जुलाई 2026। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने मंत्रालय महानदी भवन में राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग के कार्यों की उच्चस्तरीय समीक्षा की। उन्होंने विभाग द्वारा किए जा रहे प्रशासनिक सुधारों, तकनीक आधारित नवाचारों तथा नागरिकों एवं किसानों को सरल,पारदर्शी एवं समयबद्ध राजस्व सेवाएं उपलब्ध कराने के प्रयासों की समीक्षा करते हुए उनके प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि राज्य सरकार की स्पष्ट नीति राजस्व प्रशासन को पारदर्शी,जवाबदेह एवं भ्रष्टाचारमुक्त बनाना है। राजस्व मामलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही या अनियमितता स्वीकार नहीं की जाएगी तथा नागरिकों को बिना अनावश्यक कार्यालयीन आवागमन के गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। बैठक में डिजिटल किसान किताब एवं भूमि संबंधी दस्तावेजों के डिजिटलीकरण की प्रगति की समीक्षा की गई। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि किसानों को बी-1,खसरा,ऋण पुस्तिका तथा भूमि संबंधी अन्य जानकारी व्हाट्सऐप के माध्यम से सहज रूप से उपलब्ध कराने की व्यवस्था विकसित की जाए,ताकि उन्हें तहसील अथवा पटवारी कार्यालय जाने की आवश्यकता न पड़े। उन्होंने कहा कि राजस्व विभाग सीधे आमजन एवं किसानों के जीवन से जुड़ा विभाग है,इसलिए शासन

के सभी सुधारों एवं नवाचारों का लाभ अंतिम व्यक्ति तक समयबद्ध रूप से पहुंचना चाहिए। मुख्यमंत्री ने आरबीसी 6-4 के प्रकरणों का त्वरित एवं संवेदनशीलता के साथ निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आरबीसी 6-4 की ऑनलाइन व्यवस्था एक महत्वपूर्ण सुधार है,जिसके लागू होने पर आवेदक स्वयं ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे तथा संपूर्ण प्रक्रिया अधिक पारदर्शी,सरल एवं समयबद्ध होगी। उन्होंने अविवादित फौती नामांतरण की प्रक्रिया पंचायतों के माध्यम से संपादित करने की दिशा में आवश्यक कार्यवाही करने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने लंबित राजस्व प्रकरणों के शीघ्र निराकरण पर विशेष बल देते हुए सीमांकन प्रकरणों का निर्धारित समय-सीमा में निपटारा सुनिश्चित करने तथा समय-सीमा से बाहर लंबित प्रकरणों की जिला-वार नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने नकल शाखा को पूर्णतः ऑनलाइन करने के लिए इस परियोजना के प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश दिए। अधिकारियों ने बताया कि परियोजना के अंतर्गत राज्य के सभी जिला एवं तहसील कार्यालयों के महत्वपूर्ण राजस्व अभिलेखों का एकीकृत डिजिटल अभिलेखागार विकसित किया जाएगा। इससे प्रमाणित अभिलेखों का निर्गमन कुछ ही मिनटों में संभव होगा तथा अभिलेखों में छेड़छाड़ की संभावनाओं पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा सकेगा। मुख्यमंत्री ने असर्वेक्षित ग्रामों, विशेषकर अबूझमाड़ क्षेत्र में सर्वेक्षण कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए निर्धारित समय-सीमा में पूरा करने के निर्देश दिए, ताकि राजस्व अभिलेख तैयार हो सकें, भूमि अभिलेख अद्यतन हों तथा स्थानीय नागरिकों को शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ समय पर मिल सके।

साइबर तहसील व्यवस्था लागू करने की संभावनाओं पर हुई चर्चा : बैठक में साइबर तहसील व्यवस्था लागू करने की संभावनाओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई। अधिकारियों ने बताया कि इस व्यवस्था के माध्यम से अविवादित नामांतरण, अविवादित बंटवारा सहित विभिन्न राजस्व सेवाएं केंद्रीकृत एवं पूर्णतः ऑनलाइन उपलब्ध कराई जा सकेंगी। मुख्यमंत्री ने अन्य राज्यों के अनुभवों का अध्ययन कर नागरिक हित में आवश्यक नीतिगत निर्णय लेने के निर्देश दिए। बैठक में ई-कोर्ट प्रणाली, रेवेन्यू बोर्ड एवं संभागीय आयुक्त कार्यालयों में ऑनलाइन साक्ष्य प्रस्तुत करने की व्यवस्था,नक्शा डिजिटाइजेशन,ऑटो म्यूटेशन,ऑटो डायवर्सन तथा भू-अर्जन से संबंधित विषयों की भी समीक्षा की गई। अधिकारियों ने बताया कि धमतरी,अंबिकापुर एवं जगदलपुर में नक्शा परियोजना का पायलट कार्य प्रारंभ किया गया है।

पटवारी, राजस्व निरीक्षक,लिपिक एवं अन्य रिक्त पदों पर शीघ्र भर्ती

मुख्यमंत्री ने राजस्व विभाग में पटवारी, राजस्व निरीक्षक,लिपिक एवं अन्य रिक्त पदों पर शीघ्र भर्ती,तहसीलों के अधोसंरचना विकास तथा तहसीलदारों के लिए आवश्यक वाहन उपलब्ध कराने के भी निर्देश दिए। बैठक में राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा,मुख्य सचिव विकास शील,मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव सुबोध कुमार सिंह,मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत,मुख्यमंत्री के संयुक्त सचिव प्रभात मलिक,राजस्व विभाग की सचिव शम्मी आबिदी, विशेष सचिव इफ़फत आरा,संचालक भू-अभिलेख विनीत नंदनवार,संयुक्त सचिव अरविन्द एक्का सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

गिरदावरी की तैयारियां समय पर पूरा करने के निर्देश

बैठक में स्वामित्व योजना,वन अधिकार पट्टों की प्रविष्टि एवं नामांतरण,पट्टाधृति अधिनियम-2023 के प्रभावी क्रियान्वयन,एग्री स्टैक,फार्मर रजिस्ट्री एवं एक्सेम्प्टेड कैटेगरी फार्मर रजिस्ट्री की भी समीक्षा की गई। मुख्यमंत्री ने आगामी खरीफ सीजन के डिजिटल क्रॉप सर्वे एवं गिरदावरी की सभी तैयारियां समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि शासन का उद्देश्य केवल प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण नहीं, बल्कि नागरिकों को तेज, पारदर्शी, जवाबदेह एवं विश्वासपूर्ण राजस्व व्यवस्था उपलब्ध कराना है।

नकटी विस्थापन मामला : कांग्रेस ने भाजपा पर झूठ परोसने का लगाया आरोप,दस्तावेज प्रस्तुत कर बताया

रायपुर,07 जुलाई 2026। कांग्रेस पार्टी ने ग्राम नकटी से लोगों को बेदखल किये जाने के मामले में भाजपा सरकार के मंत्रियों और नेताओं के आ रहे बयानों को झूठा करार दिया और कहा कि हाउसिंग बोर्ड के चेयरमैन अनुराग सिंहदेव द्वारा नकटी में विधायकों के लिए आवास की कोई भी योजना नहीं होने का दावा पूरी तरह गलत है। कांग्रेस ने नकटी के विस्थापितों को गांव में ही बसाहट और उचित मुआवजे की मांग की है।

नकटी में किया गया तोड़ फोड़ भाजपा सरकार का अपराधिक कृत्य

धनेन्द्र साहू ने कहा...'भाजपा सरकार अपराध बोध से ग्रसित है, इतना बड़ा जघन्य अपराध, 85 से अधिक परिवारों को के साथ जो किया है वह अक्षम्य अपराध है। सरकार और भाजपा के सभी लोग अब इस घटना की दिशा मोड़ने में लगे हुए हैं और यह साबित करने की कोशिश में लगे हुए हैं कि उन्होंने कोई गलती नहीं की है। सरे दस्तावेज इस बात को साबित करते हैं कि इस कार्रवाई के लिए भारतीय जनता पार्टी की वर्तमान सरकार पूर्णतः दोषी है।' नकटी के प्रभावितों के लिए गठित कांग्रेस की कमेटी के संयोजक वरिष्ठ कांग्रेस नेता धनेन्द्र साहू ने प्रेस वार्ता में कहा कि नकटी में किया गया तोड़ फोड़ भाजपा सरकार का अपराधिक कृत्य है। बिना किसी कार्य योजना के गरीबो के मकानो को तोड़ा गया, उसके चौतरफा विरोध के बाद सरकार लगातार झूठ परोस रही है। भाजपा की सरकार ने 50 वर्षों से नकटी गांव में रह रहे गरीबों के घर को तोड़कर अपने तानाशाही चरित्र को प्रदर्शित किया है। विधायकों का आवास बनाने के लिए अन्य सरकारी जमीनों का उपयोग करना था लेकिन नकटी गांव की जनता के प्रति भाजपा की दुर्भावना सामने आई है। नकटी गांव की जनता के घरों को अवैध बताने वाली भाजपा की सरकार जवाब दे कि जब वह जमीन अवैध थी तो वहां प्रधानमंत्री आवास कैसे बन गया। नकटी में निवास कर रहे लोगों का राशन कार्ड आधार कार्ड बन गया और उनके घरों पर बिजली कैसे पहुंच गई। बारिश के मौसम में गरीबों को घर से बेघर किया गया, यह अन्याय है कांग्रेस पार्टी इसका विरोध करती है। धनेन्द्र साहू ने दस्तावेजों का जिक्र करते हुए बताया कि नकटी के जिस भूभाग से अतिक्रमण हटाया गया है, वहां की अधिकांश जमीन शामिलात चरागाह की है, अर्थात गाँव के लोगों द्वारा चकबंदी के समय अपने हिस्से की जमीन चारागाह के लिए पंचायत को दी गई है और इस पर ग्राम सभा का अधिकार है। इस जमीन को सरकार नहीं ले सकती और इसे लेकर ग्राम सभा के प्रस्ताव को मंजूरी देना सरकार की बाध्यता है।

नकटी से हटाए गए लोगों को गांव में ही बसाहट और उचित मुआवजा दिए जाने की मांग करते हुए धनेन्द्र साहू ने कहा कि वर्तमान में ग्रामीणों को कई किलोमीटर दूर बसाने का प्रयास किया जा रहा है, यह अमानवीय कार्रवाई है और और इससे ग्रामीणों के सारे अधिकार छिन जायेंगे। पूर्व विधायक विकास उपाध्याय ने पूर्व आईएएस अफसर और वर्तमान में भाजपा की सरकार के वित्त मंत्री ओपी चौधरी पर आरोप मढ़ते हुए कहा कि उन्होंने पूर्व में रायपुर में कलेक्टर के पद पर रहते हुए कई इलाकों से गलत तरीके से अतिक्रमण हटवाया। वर्तमान में भी नकटी के ग्रामीणों को अवैधानिक तरीके से बेदखल किया गया है। विकास ने आरोप लगाया कि चौधरी ने यह कृत्य इलाके में जमीनें खरीदने वाले उद्योगपतियों को लाभ पहुंचाने के लिए किया है।

अंकित आनंद के पत्र का किया जिक्र

धनेन्द्र साहू ने कहा कि जिस नकटी के जमीन की बात हो रही है, उस समय के आवास एवं पर्यावरण सचिव अंकित आनंद का अक्टूबर 2024 का यह पत्र सारे मामले को साफ कर देता है, आनंद ने जो पत्र लिखा है उसमें उन्होंने संबंधित खसरा नम्बरो का उल्लेख किया है, नक्त के 29.172 हेक्टेयर भूमि के आबंटन हेतु उन्होंने कलेक्टर रायपुर को पत्र लिखा है। उन्होंने लिखा है कि इसमें कच्चे पक्के छोटे छोटे मकान बने हुए हैं, यहां अतिक्रमण बढ़ता जा रहा है, जिससे आगे माननीय जन प्रतिनिधियों को विशेष आवास योजनान्तर्गत विकसित भूखंड आबंटित करने में बाधा उत्पन्न होगी। अतिक्रमण हटाने और गृह निर्माण मंडल को शीघ्र भूमि आबंटित करने की कार्यवाही सुनिश्चित करें।

रायपुर की 3 डी फैक्ट्री में ब्लास्ट,3 मजदूरों की मौत

200 मीटर दूर बिखरे मिले बॉडी पार्ट,मृतकों में 2 एमपी के रहने वाले

रायपुर,07 जुलाई 2026। रायपुर के उरला औद्योगिक क्षेत्र में थ्रीडी फैक्ट्री में मंगलवार शाम को ब्लास्ट हुआ है। हादसे में 3 मजदूरों की मौत हो गई है। बॉडी पार्ट्स 200 मीटर दूर पड़े मिले। विस्फोट के बाद फैक्ट्री परिसर में अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना मिलते ही उरला पुलिस, फायर ब्रिगेड और फैक्ट्री प्रबंधन की टीम मौके पर पहुंची। राहत और बचाव अभियान शुरू किया गया। हादसे में घायल कमल सिंह ने अस्पताल ले जाते समय दम तोड़ दिया, जबकि लाल सिंह और अरुण पांडे की मौके पर ही मौत हो गई थी। मृतक कमल सिंह (25) और लाल सिंह मध्यप्रदेश के डिंडौरी जिले के रहने वाले थे, जबकि अरुण पांडे (19) जांजगीर-चांपा जिले का रहने वाला था। बताया जा रहा है कि फैक्ट्री में पिग आयरन बनाने का काम होता है, जिससे गाड़ियों के पुर्जे तैयार किए जाते हैं।

बिखरे शरीर के अंगों पर लगी चींटियां

ब्लास्ट के बाद फैक्ट्री का मंजर बेहद भयावह था। विस्फोट के कारण मृतकों के शरीर के अंग फैक्ट्री परिसर में अलग-अलग स्थानों पर बिखर गए। खुले में पड़े अवशेषों पर चींटियां लग गई।

मौके पर उरला पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम : घटना की सूचना मिलते ही उरला पुलिस, फायर ब्रिगेड और फैक्ट्री प्रबंधन की टीम मौके पर पहुंची। राहत और बचाव अभियान शुरू किया गया।

आधा किलोमीटर दूर तक सुनाई दी आवाज : प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ब्लास्ट इतना तेज था कि उसकी आवाज दूर तक सुनाई दी। विस्फोट के बाद फैक्ट्री परिसर में धुआं फैल गया। सूचना मिलते ही डीसीपी, एडीसीपी नॉर्थ और एसीपी सहित पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे। फायर ब्रिगेड और एसडीआरएफ की टीमें भी राहत और बचाव कार्य में जुटी हुई हैं। फिलहाल, ब्लास्ट के कारणों की जांच की जा रही है।

एनएसयूआई के संगठनात्मक चुनाव की तैयारी शुरू,कैंपस से प्रदेश तक चुनी जाएगी नई टीम,16 से 27 वर्ष के युवा होंगे उम्मीदवार

रायपुर,07 जुलाई 2026। भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन ने देशभर में संगठनात्मक चुनावों की घोषणा के साथ ही छत्तीसगढ़ में भी नई कार्यकारिणी के गठन की प्रक्रिया शुरू करने की तैयारी तेज कर दी है। इस बार संगठन में कैंपस स्तर से लेकर जिला और प्रदेश स्तर तक लोकतांत्रिक प्रक्रिया के जरिए नए पदाधिकारियों का चयन किया जाएगा। चुनाव प्रक्रिया दो चरणों में पूरी होगी। पहले चरण में प्रदेश के सरकारी, निजी और सहायता प्राप्त महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में कैंपस अध्यक्ष का चुनाव कराया जाएगा। छात्र-छात्राएं सीधे मतदान कर अपने कॉलेज या विश्वविद्यालय के अध्यक्ष का चयन करेंगे। संगठन का उद्देश्य छात्र नेतृत्व को मजबूत करना और युवाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया से जोड़ना है। दूसरे चरण में कैंपस स्तर पर चुने गए प्रतिनिधियों के आधार पर जिला और प्रदेश इकाइयों का गठन किया जाएगा। इसके बाद नई जिला कार्यकारिणी और प्रदेश कार्यकारिणी का गठन होगा। चुनाव में भाग लेने के लिए उम्मीदवारों की आयु 16 से 27 वर्ष के बीच निर्धारित की गई है। एनएसयूआई ने सदस्यता अभियान भी शुरू करने की तैयारी कर ली है। संगठन की सदस्यता शुल्क 45 रुपये तय किया गया है। चुनाव लड़ने और मतदान करने के लिए सदस्यता लेना अनिवार्य होगा। इसके लिए प्रदेशभर के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में विशेष सदस्यता अभियान चलाया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक छात्र संगठन से जुड़ सकें। चुनाव की घोषणा के बाद छात्र नेताओं और कार्यकर्ताओं में उत्साह देखने को मिल रहा है। लंबे अंतराल के बाद संगठन में चुनावी प्रक्रिया के माध्यम से नई नेतृत्व टीम का चयन होगा। माना जा रहा है कि इससे छात्र राजनीति में नई ऊर्जा आएगी और युवाओं को संगठन के भीतर नेतृत्व विकसित करने का बेहतर अवसर मिलेगा। एनएसयूआई की ओर से जल्द ही चुनाव कार्यक्रम की विस्तृत समय-सारिणी जारी की जाएगी।

मानसून सत्र से पहले भाजपा विधायक दल की बैठक विपक्ष के सवालों का जवाब देने की रणनीति पर मंथन

रायपुर,07 जुलाई 2026। छत्तीसगढ़ विधानसभा के 13 जुलाई से शुरू होने वाले पांच दिवसीय मानसून सत्र से पहले सत्ता पक्ष ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में नवा रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास में भाजपा विधायक दल की बैठक आयोजित की गई, जिसमें सभी मंत्री और भाजपा विधायक शामिल हुए। बैठक में आगामी मानसून सत्र के दौरान सरकार की रणनीति, विपक्ष के संभावित आरोपों का जवाब, विभिन्न विभागों की तैयारियों और सदन में सरकार की प्राथमिकताओं पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही विधायकों के बीच बेहतर समन्वय और सरकार की उपलब्धियों को प्रभावी ढंग से सदन में रखने की रणनीति पर भी मंथन हुआ। भाजपा विधायक गजेंद्र यादव ने कहा कि सरकार विपक्ष

के हर सवाल का जवाब देने के लिए पूरी तरह तैयार है और बैठक में सत्र की तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की जा रही है। बैठक से पहले मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि सरकार ने मानसून सत्र को लेकर सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। उन्होंने बताया कि सत्र के दौरान प्रदेश से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होगी। इस बार विधानसभा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विधायकों का सम्मान भी किया जाएगा, जिसे संसदीय परंपराओं को मजबूत करने की दिशा में अहम पहल माना जा रहा है। मानसून सत्र से पहले मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह से स्पीकर हाउस में मुलाकात कर सत्र के सुचारु संचालन और तैयारियों पर चर्चा की। इसके बाद नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत ने भी विधानसभा अध्यक्ष से मुलाकात कर विपक्ष की रणनीति पर चर्चा की। कांग्रेस ने मानसून सत्र में सरकार को कानून-व्यवस्था,किसानों की समस्याएं,रायपुर के नकटी गांव का भूमि विवाद,बिजली-पानी संकट,सड़क निर्माण,खाद-बीज की उपलब्धता, सिंचाई व्यवस्था, धान खरीदी की तैयारी और मानसून से जुड़ी व्यवस्थाओं जैसे मुद्दों पर घेरने की रणनीति बनाई है। नकटी गांव में अतिक्रमण हटाने और विस्थापन का मामला भी सदन में गूंजने के आसार हैं।

नाले में मिली महिला की अर्धनग्न लाश,तोरवा पुलिस ने शुरू की जांच

बिलासपुर,07 जुलाई 2026। छत्तीसगढ़ की न्यायधानी बिलासपुर में उस समय सनसनी फैल गई, जब रेलवे परिसर के पास एक नाले में महिला की अर्धनग्न अवस्था में लाश मिली। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। फिलहाल महिला की पहचान नहीं हो सकी है और पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। यह पूरा मामला तोरवा थाना क्षेत्र का बताया जा रहा है। जानकारी के अनुसार, रेलवे परिसर के पास स्थित तितली चौक के नाले में स्थानीय लोगों ने एक महिला का शव देखा। महिला की हालत देखकर लोगों ने तुरंत इसकी सूचना पुलिस को दी।

सूचना मिलने के बाद तोरवा थाना पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने शव को नाले से बाहर निकलवाकर पंचनामा कार्रवाई पूरी की और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, मृतका की उम्र करीब 40 से 45 वर्ष के बीच बताई जा रही है। महिला की पहचान के लिए पुलिस ने आसपास के क्षेत्रों में जानकारी जुटानी शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, महिला की तस्वीर सभी थाना क्षेत्रों में भेजी गई है, ताकि उसकी पहचान की जा सके।

एनटीपीसी की दलदल समस्या से त्रस्त किसान,मुआवजा कटने पर फूटा गुस्सा..

बिलासपुर,07 जुलाई 2026। एनटीपीसी सीपत परियोजना से प्रभावित क्षेत्र के किसानों की परेशानी एक बार फिर सामने आई है। वर्षों से दलदल और जलभराव की समस्या झेल रहे किसानों ने आरोप लगाया है कि उनकी खेती योग्य जमीन लगातार खराब होती जा रही है, लेकिन समस्या के स्थायी समाधान के बजाय उन्हें हर साल मुआवजे के लिए संघर्ष करना पड़ता है। किसानों का कहना है कि एनटीपीसी परियोजना के प्रभाव से कई गांवों के खेतों में जलभराव और दलदल की स्थिति बनी हुई है। इसके कारण

खेती करना मुश्किल हो गया है और उत्पादन भी प्रभावित हो रहा है। बावजूद इसके मुआवजा पाने के लिए किसानों को बार-बार आवेदन देना पड़ता है और लंबी प्रशासनिक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। ग्रामीणों के अनुसार इस वर्ष भी लगभग 30 किसानों का मुआवजा काट दिया गया है, जिससे प्रभावित किसानों में भारी नाराजगी है। किसानों ने आरोप लगाया कि एनटीपीसी के अधिकारियों की कार्यप्रणाली के कारण वास्तविक स्थिति प्रशासन तक सही तरीके से नहीं पहुंच पाती और हर वर्ष प्रभावित किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। लगातार शिकायतों और विरोध के बाद कलेक्टर के निर्देश पर एसडीएम और तहसीलदार ने प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने खेतों की स्थिति का जायजा लिया और किसानों की समस्याएं सुनीं। हालांकि किसानों का आरोप है कि निरीक्षण के दौरान खेतों के भीतर जाकर वास्तविक हालात देखने के बजाय अधिकांश अवलोकन बाहर से ही किया गया, जिससे जमीन की वास्तविक स्थिति का सही आकलन नहीं हो सका। किसानों ने बताया कि वर्षों से सर्वेक्षण ऐसे समय कराया जाता है जब गर्मी के कारण खेत अपेक्षाकृत सूखे दिखाई देते हैं। उनका कहना है कि जून-जुलाई में बारिश शुरू होते ही अधिकांश खेत दलदल में बदल जाते हैं। वहीं अक्टूबर-नवंबर में फसल पकने के समय भी कई स्थानों पर पानी और कीचड़ बना रहता है,जिससे फसल की कटाई तक प्रभावित होती है। ग्रामीणों का कहना है कि खेतों की स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि कई जगह मेड़ तक पहचान में नहीं आती।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा साईं ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)